

## سُورَةُ الْأَنْعَام - 6

سُورَةُ الْأَعْمَال

## سُورَةُ الْأَنْعَام के संक्षिप्त विषय

यह سُورَةٌ مَكْكَيَّة है, इस में 165 आयते हैं

- अन्माम का अर्थः चौपाये होता है। इस सूरह में कुछ चौपायों के वैध तथा अवैध होने के संबंध में अरब वासियों के भ्रम का खण्डन किया गया है। और इसी लिये इस सूरह का नाम (अन्माम) रखा गया है।
- इस में शिर्क का खण्डन किया गया है। और एकेश्वर का आमंत्रण दिया गया है।
- इस में आखिरत (परलोक) के प्रति आस्था का प्रचार है। तथा इस कुविचार का खण्डन है कि जो कुछ है यही संसारिक जीवन है।
- इस में उन नैतिक नियमों को बताया गया है जिन पर इस्लामी समाज की स्थापना होती है और नबी (सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम) के विरुद्ध आपत्तियों का उत्तर दिया गया है।
- आकाशों तथा धरती और स्वयं मनुष्य में अल्लाह के एक होने की निशानियों पर ध्यान दिलाया गया है।
- इस में नबी (सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम) तथा मुसलमानों को दिलासा दी गई है।
- इस्लाम के विरोधियों को उन की अचेतना पर सावधान किया गया है।
- अन्त में कहा गया है कि लोगों ने अलग-अलग धर्म बना लिये हैं जिन का सत्थर्म से कोई संबंध नहीं। और प्रत्येक अपने कर्म का उत्तरदायी है।

अल्लाह के नाम से जो अत्यन्त  
कृपाशील तथा दयावान् है।

بِسْمِ اللَّهِ الرَّحْمَنِ الرَّحِيمِ

1. सब प्रशंसा उस अल्लाह के लिये है, जिस ने आकाशों तथा धरती को बनाया तथा अंधेरे और उजाला

أَحَمَدُ بْنُو الْذِي خَلَقَ السَّمَاوَاتِ وَالْأَرْضَ  
وَجَعَلَ النُّجُومَ وَالنُّورَةَ لِلَّذِينَ كَفَرُوا

बनाया, फिर भी जो काफिर हो गये, वह (दूसरों को) अपने पालनहार के बराबर समझते<sup>[१]</sup> हैं।

بِرَبِّهِمْ يَعْدَلُونَ ①

2. वही है जिस ने तुम्हें मिश्री से उत्पन्न<sup>[२]</sup> किया फिर (तुम्हारे जीवन की) अवधि निर्धारित कर दी, और एक निर्धारित अवधि (प्रलय का समय) उस के पास<sup>[३]</sup> है, फिर भी तुम सदैह करते हो।
3. वही अल्लाह पूज्य है आकाशों तथा धरती में। वह तुम्हारे भेदों तथा खुली बातों को जानता है। तथा तम जो भी करते हो उस को जानता है।
4. और उन के पास उन के पालनहार की आयतों (निशानियों) में से कोई आयत (निशानी) नहीं आई, जिस से उन्होंने मुँह फेर न<sup>[४]</sup> लिये हों।
5. उन्होंने सत्य को झुठला दिया है, जब भी उन के पास आया। तो शीघ्र ही उन के पास उस के समाचार आ जायेगे<sup>[५]</sup> जिस का उपहास कर रहें हैं।
6. क्या वह नहीं जानते कि उन से पहले हम ने कितनी जातियों का नाश कर

هُوَ الَّذِي خَلَقَكُمْ مِّنْ طِينٍ ثُمَّ فَنَّى أَجَلًا وَاجِلًا  
مُسَئِّ عَنْدَكُمْ إِنَّمَا تَمَرُّونَ ②

وَهُوَ اللَّهُ فِي السَّمَاوَاتِ وَفِي الْأَرْضِ يَعْلَمُ بِإِيمَانِكُمْ  
وَجَهَرَ كُمْ وَدِيَعَلُومُ مَا لَكُمْ بِإِيمَانِكُمْ ③

وَمَا تَأْتِيهِمُ مِّنْ آيَةٍ فَرَبُّهُمْ إِلَّا كُلُّهُمْ بِأَعْغَصِهَا  
مُغَرِّضُونَ ④

فَقَدْ كَذَّبُوا بِالْحَقِّ لَمَّا جَاءُهُمْ فَسَوْفَ يَأْتِيَهُمْ أَبْيَانًا  
مَا كَانُوا بِهِ يَشْهُدُونَ ⑤

الْأَوْرَاقُ لَأَنَّهُمْ أَهْلَكُنَا مِنْ قَبْلِهِمْ مَذَهَّبُهُمْ

1 अर्थात् वह अंधेरों और प्रकाश में विवेक (अन्तर) नहीं करते, और रचित को रचयिता का स्थान देते हैं।

2 अर्थात् तुम्हारे पिता आदम अलैहिस्सलाम को।

3 दो अवधि एक जीवन और कर्म के लिये, तथा दूसरी कर्मों के फल के लिये।

4 अर्थात् मिश्रणवादियों के पास।

5 अर्थात् उस के तथ्य का ज्ञान हो जायेगा। यह आयत मब्का में उस समय उत्तरी जब मुसलमान विवश थे, परन्तु बद्र के युद्ध के बाद यह भविष्य बाणी पूरी होने लगी और अन्ततः मिश्रणवादी परास्त हो गये।

दिया जिन्हें हम ने धरती में ऐसी शक्ति और अधिकार दिया था जो अधिकार और शक्ति तुम्हें नहीं दिये हैं। और हम ने उन पर धारा प्रवाह वर्षा की, और उन की धरती में नहरें प्रवाहित कर दी, फिर हम ने उन के पापों के कारण उन्हें नाश कर दिया,<sup>[1]</sup> और उन के पश्चात् दूसरी जातियों को पैदा कर दिया।

7. (हे नबी!) यदि हम आप पर कागज में लिखी हुई कोई पुस्तक उतार<sup>[2]</sup> दें, फिर वह उसे अपने हाथों से छूयें, तब भी जो काफिर हैं, कह देंगे कि यह तो केवल खुला हुआ जादू है।
8. तथा उन्होंने कहा:<sup>[3]</sup> इस (नबी) पर कोई फ़रिश्ता क्यों नहीं उतारा<sup>[4]</sup> गया? और यदि हम कोई फ़रिश्ता उतार देते, तो निर्णय ही कर दिया जाता, फिर उन्हें अव्सर नहीं दिया जाता।<sup>[5]</sup>
9. और यदि हम किसी फ़रिश्ते को नबी बनाते, तो उसे किसी पुरुष ही के में बनाते,<sup>[6]</sup> और उन को उसी सदेह में

1 اर्थात् अल्लाह का यह नियम है कि पापियों को कुछ अव्सर देता है, और अन्ततः उन का विनाश कर देता है।

2 इस में इन काफिरों के दुराग्रह की दशा का वर्णन है।

3 जैसा कि वह माँग करते हैं। (देखिये: سُورَةُ الْأَنْعَامُ बनीِ إِسْمَاعِيلَ, آيَةُ ٩٣)

4 अर्थात् अपने वास्तविक रूप में जब कि जिब्रील (अलैहिस्सलाम) मनुष्य के रूप में आया करते थे।

5 अर्थात् मानने या न मानने का।

6 क्योंकि फ़रिश्ते को आँखों से उस के स्वभाविक रूप में देखना मानव के बस में नहीं है। और यदि फ़रिश्ते को रसूल बना कर मनुष्य के रूप में भेजा जाता

فِي الْأَرْضِ مَا لَمْ يَكُنْ لَّهُ وَأَنْشَأْنَا الشَّمَاءَ عَلَيْهِمْ  
وَدُرَارًا وَجَعَلْنَا الْأَنْهَرَ مَجْوُنِي مِنْ تَعْذِيرِهِمْ  
فَأَهْلَكْنَاهُمْ بِذُنُوبِهِمْ وَأَنْشَأْنَا مِنْ بَعْدِهِمْ قَرْنَآنَ  
أَخْرَيْنَ ①

وَأَنْزَلْنَا عَلَيْكَ كِتَابًا فِي قُرْطَلِهِ فَلَمْ سُوَّهُ  
يَا يَدِيْهِ مُعْلَقًا الَّذِينَ كَفَرُوا إِنْ هَذَا إِلَّا  
سُحْرُّهُمْ ②

وَقَالُوا نَلَّا أُنْزِلَ عَلَيْهِ مَلْكٌ وَلَوْأَنْزَلْنَا مَلْكًا  
لَفِي الْأَرْضِ لَا يُنْظَرُونَ ③

وَلَوْجَعَنْتَهُ مَلْكًا جَعَلْنَاهُ رَجُلًا وَلَلَّبَسْنَا  
عَلَيْهِمْ مَا يَلْبِسُونَ ④

डाल देते जो सदेह (अब) कर रहे हैं।

10. हे नबी! आप से पहले भी रसूलों के साथ उपहास किया गया, तो जिन्होंने उन से उपहास किया, उन को उन के उपहास के (दुष्परिणाम ने) घेर लिया।

11. (हे नबी!) उन से कहो कि धरती में फिरो, फिर देखो कि झुठलाने वालों का दुष्परिणाम क्या<sup>[1]</sup> हुआ?

12. (हे नबी!) उन से पूछिये कि जो कुछ आकाशों तथा धरती में है, वह किस का है? कहो: अल्लाह का है, उस ने अपने ऊपर दया को अनिवार्य कर<sup>[2]</sup> लिया है, वह तुम्हें अवश्य प्रलय के दिन एकत्र<sup>[3]</sup> करेगा जिस में कोई सदेह नहीं, जिन्होंने अपने आप को क्षति में डाल लिया वही ईमान नहीं ला रहे हैं।

तब भी यह कहते यह तो मनुष्य है। यह रसूल कैसे हो सकता है?

- 1 अर्थात् मक्का से शाम तक आद, समूद तथा लूत (अलैहिस्सलाम) की बस्तियों के अवशेष पड़े हुये हैं, वहाँ जाओ और उन के दुष्परिणामों से शिक्षा लो।
- 2 अर्थात् पूरे विश्व की व्यवस्था उस की दया का प्रमाण है। तथा अपनी दया के कारण ही विश्व में दण्ड नहीं दे रहा है। हदीस में है कि जब अल्लाह ने उत्पत्ति कर ली तो एक लेख लिखा जो उस के पास उस के अर्श (सिंहासन) के ऊपर है: ((निश्चय मेरी दया मेरे क्रोध से बढ़ कर है)) (सहीह बुखारी- 3194, मुस्लिम-2751) दूसरी हदीस में है कि अल्लाह के पास सौ दया हैं। उस में से एक को जिन्हों, इनसानों तथा पशुओं और कीड़ों-मकोड़ों के लिये उतारा है। जिस से वह आपस में प्रेम तथा दया करते हैं तथा निन्दावे दया अपने पास रख ली है। जिन से प्रलय के दिन अपने बंदों (भक्तों) पर दया करेगा। (सहीह बुखारी- 6000, सहीह मुस्लिम-2752 )
- 3 अर्थात् कर्मों का फल देने के लिये।

وَلَقَدِ اسْتَهْزَى بِرُسُلِنَا مَنْ كَانَ فِي الْأَرْضِ  
بِالَّذِينَ سَخَرُوا مِنْهُمْ مَا كَانُوا يَهْمِ  
كَسْتَهْزِئَةً

فُلْ سِيرُوا فِي الْأَرْضِ ثُمَّ انْظُرُوا إِلَيْنَا  
عَاقِبَةُ الْمُكْفِرِينَ

فُلْ لَمْنَ مَأْنِ السَّمَوَاتِ وَالْأَرْضِ فُلْ تَلَهُ  
كَتَبَ عَلَى نَفْسِهِ الرَّحْمَةَ لِجَمِيعِكُمْ إِلَيَّ يَوْمَ  
الْقِيَمَةِ لَا رَبِّ يَرْبِّ فِي الْأَرْضِ خَيْرُو أَنْفُسُهُمْ فَهُمْ  
كَلِيلُ مُؤْمِنُونَ

13. तथा उसी का<sup>[१]</sup> है, जो कुछ रात और दिन में बस रहा है, और वह सब कुछ सुनता जानता है।
14. (हे नबी!) उन से कहो कि क्या मैं उस अल्लाह के सिवा (किसी) को सहायक बना लूँ, जो आकाशों तथा धरती का बनाने वाला है, वह सब को खिलाता है और उसे कोई नहीं खिलाता? आप कहिये कि मुझे तो यही आदेश दिया गया है कि प्रथम आज्ञाकारी हो जाऊँ तथा कदापि मुशरिकों में से न बनूँ।
15. आप कह दें कि मैं डरता हूँ यदि अपने पालनहार की अवज्ञा करूँ तो एक घोर दिन<sup>[२]</sup> की यातना से।
16. तथा जिस से उस (यातना) को उस दिन फेर दिया गया, तो अल्लाह ने उस पर दया कर दी, और यही खुली सफलता है।
17. यदि अल्लाह तुम्हें कोई हानि पहुँचाये, तो उस के सिवा कोई नहीं जो उसे दूर कर दे और यदि तुम्हें कोई लाभ पहुँचाये, तो वही जो चाहे कर सकता है।
18. तथा वही है, जो अपने सेवकों पर

1 अर्थात् उसी के अधिकार में तथा उसी के आधीन है।

2 इन आयतों का भावार्थ यह है कि जब अल्लाह ही ने इस विश्व की उत्पत्ति की है, वही अपनी दया से इस की व्यवस्था कर रहा है, और सब को जीविका प्रदान कर रहा है, तो फिर तुम्हारा स्वभाविक कर्म भी यही होना चाहिये कि उसी एक की वंदना करो। यह तो बड़े कुपथ की बात होगी कि उस से मुँह फेर कर दूसरों की पूजा अराधना करो और उन के आगे झुको।

وَلَهُ مَا سَكَنَ فِي السَّمَاءِ وَالْأَرْضِ وَهُوَ الشَّمِيعُ  
الْعَلِيمُ<sup>①</sup>

قُلْ أَعْلَمُ اللَّهُ أَنْ يَخْدُلُ إِلَيْا قَاطِرَ السَّمَوَاتِ  
وَالْأَرْضِ وَهُوَ يُطْعِمُ وَلَا يُطْعَمُ قُلْ إِنَّ  
إِرْثَ اُنَّ الْكُوَنَ أَقْلَى مِنْ أَسْلُكَ وَلَا تَكُونَ  
مِنَ الْمُشْرِكِينَ<sup>②</sup>

قُلْ إِنَّ أَخَافُ إِنْ عَصَيْتُ رَبِّي عَذَابَ  
يَوْمٍ عَظِيمٍ<sup>③</sup>

مَنْ يُصْرَفُ عَنْهُ يَوْمَئِنْ فَقَدْ رَحِمَهُ وَذَلِكَ  
الْفُورُزُ الْمُبِينُ<sup>④</sup>

وَلَنْ يُمْسِكَ اللَّهُ بِصَرِيرٍ فَلَا كَاشِفَ لَهُ إِلَّا هُوَ  
وَلَنْ يُمْسِكَ بِخَيْرٍ فَهُوَ عَلَى كُلِّ شَيْءٍ  
قَدِيرٌ<sup>⑤</sup>

وَهُوَ الْقَاهِرُ فَوْقَ عِبَادِهِ وَهُوَ الْجَيْمُ الْعَظِيمُ<sup>⑥</sup>

पूरा अधिकार रखता है तथा वह बड़ा ज्ञानी सर्वसूचित है।

19. हे नबी! इन (मुश्ऱिरिकों) से पूछो कि किस की गवाही सब से बढ़ कर है? आप कह दें कि अल्लाह मेरे तथा तुम्हारे बीच गवाह<sup>[1]</sup> है। तथा मेरी ओर यह कुर्झान वही (प्रकाशना) द्वारा भेजा गया है, ताकि मैं तुम्हें सावधान करूँ<sup>[2]</sup> तथा उसे जिस तक यह पहुँचा क्या वास्तव में तुम यह साक्ष्य (गवाही) दे सकते हो कि अल्लाह के साथ दूसरे पूज्य भी हैं? आप कह दें कि मैं तो इस की गवाही नहीं दे सकता। आप कह दें कि वह तो केवल एक ही पूज्य है, तथा वास्तव में मैं तुम्हारे शिर्क से विरक्त हूँ।

20. जिन लोगों को हम ने पुस्तक<sup>[3]</sup> प्रदान की है, वह आप को उसी प्रकार पहचानते हैं, जैसे अपने पुत्रों को पहचानते<sup>[4]</sup> हैं, परन्तु जिन्होंने स्वयं को क्षति में डाल रखा है, वही ईमान नहीं ला रहे हैं।

21. तथा उस से बड़ा अत्याचारी कौन होगा जो अल्लाह पर झूठा आरोप लगाये<sup>[5]</sup>, अथवा उस की आयतों को

قُلْ أَئُّ شَيْءٍ أَكْبَرُ شَهَادَةً فَقُلْ اللَّهُ أَكْبَرُ شَهِيدٌ بِإِيمَانِي  
وَبِتَنَكُلِّ وَأَوْجَى إِلَيْهِ هَذَا الْقُرْآنُ لِأَنَّهُ نَدِيْرٌ كُلُّ يَوْمٍ  
وَمَنْ أَبْلَغَ أَيْتَكُلْ لَتَشْهِدُونَ أَنَّ مَعَ اللَّهِ الْحَمْدُ  
أُخْرَى قُلْ لَا شَهَدُ دُلْ إِنَّا هُوَ الْحَمْدُ وَإِنَّنِي  
بِرَبِّي وَمَنْ أَنْتُ بِرَبِّكُونَ ⑥

الَّذِينَ أَتَيْنَاهُمُ الْكِتَابَ يَعْرُفُونَهُ كَمَا يَعْرُفُونَ  
أَبْنَاءَهُمُ الَّذِينَ حَسِرُوا عَلَىٰ فَهُمْ لَا يُؤْمِنُونَ ①

وَمَنْ أَظْلَمُ مِنْ افْتَرَى عَلَى اللَّهِ كَيْدًا وَكَذَابًا  
يَا بَيْتَهُ إِنَّهُ لَأَيْفَلُهُ الظَّالِمُونَ ④

1 अर्थात् मेरे नबी होने का साक्षी अल्लाह तथा उस का मुझ पर उतारा हुआ कुर्झान है।

2 अर्थात् अल्लाह की अवैज्ञा के दुष्परिणाम से।

3 अर्थात् तौरात तथा इंजील आदि।

4 अर्थात् आप के उन गुणों द्वारा जो उन की पुस्तकों में वर्णित है।

5 अर्थात् अल्लाह का साझी बनाये।

झूठलाये? निस्सदेह अत्याचारी सफल  
नहीं होंगे।

22. जिस दिन हम सब को एकत्र करेंगे,  
तो जिन्हों ने शिर्क किया है, उन से  
कहेंगे कि तुम्हारे वह साझी कहाँ गये  
जिन्हें तुम (पूज्य) समझ रहे थे?
23. फिर नहीं होगा उन का उपद्रव इस  
के सिवा कि: वह कहेंगे कि अल्लाह की  
शपथ! हम मुशरिक थे ही नहीं।
24. देखो कि कैसे अपने ऊपर ही झूठ  
बोल गये और उन से वह (मिथ्या  
पूज्य) जो बना रहे थे खो गये!
25. और उन (मुशरिकों) में से कुछ आप  
की बात ध्यान से सुनते हैं, और  
(वास्तव में) हम ने उन के दिलों पर  
पर्दे (आवरण) डाल रखे हैं कि बात न  
समझें<sup>[1]</sup>, और उन के कान भारी कर  
दिये हैं, यदि वह (सत्य के) प्रत्येक  
लक्षण देख लें, तब भी उस पर ईमान  
नहीं लायेंगे यहाँ तक कि जब वह  
आप के पास आ कर झगड़ते हैं, जो  
काफिर हैं तो वह कहते हैं कि यह तो  
पूर्वजों की कथायें हैं।
26. वह उसे<sup>[2]</sup> (सुनने से) दूसरों को  
रोकते हैं, तथा स्वयं भी दूर रहते हैं।  
और वह अपना ही विनाश कर रहे  
हैं। परन्तु समझते नहीं हैं।

1 न समझने तथा न सुनने का अर्थ यह है कि उस से प्रभावित नहीं होते क्यों कि  
कुफ्र तथा निफाक के कारण सत्य से प्रभावित होने की क्षमता खो जाती है।

2 अर्थात् कुर्�আন सुनने से।

وَيَوْمَ نَخْرُقُهُمْ جَمِيعًا ثُمَّ نَقُولُ لِلَّذِينَ أَشْرَكُوا  
أَيْنَ شَرَكُوكُمْ كُلُّ الَّذِينَ كَفَرُوكُمْ رَعْبُونَ<sup>[3]</sup>

نَفَرُوكُمْ فَتَنَاهُمُ إِلَّا أُنْ قَاتِلُوا وَاللَّهُ رَبُّ الْعَالَمِينَ<sup>[4]</sup>  
مُشْرِكُينَ<sup>[5]</sup>

أَنْظُرْكُمْ كَذَبُوكُمْ عَلَىٰ أَنْفُسِهِمْ وَضَلَّ عَنْهُمْ مَا  
كَانُوا يَعْتَدُونَ<sup>[6]</sup>

وَمِنْهُمْ مَنْ يَسْمِعُ لِلَّهِ وَجَعَلَنَا عَلَىٰ قُلُوبِهِمْ  
أَكْنَةً أَنْ يَقْعُدُوا وَقَدْ أَذَانَهُمْ وَقَرَا وَإِنْ يَرْفَعُوا  
إِيمَانَ لَيْلَةً يُؤْمِنُوا بِهَا حَتَّىٰ إِذَا جَاءُوكُمْ لَمْ يُجَادِلُوكُمْ  
يَوْلَى الَّذِينَ كَفَرُوا لَنْ هَذَا الْأَسْاطِيرُ  
الْأَوَّلِينَ<sup>[7]</sup>

وَهُمْ يَهُونُ عَنْهُ وَيَنْسُونَ عَنْهُ وَإِنْ يَهُوكُمْ  
إِلَّا نَفْسُهُمْ وَمَا يَشْعُرُونَ<sup>[8]</sup>

27. तथा (हे नबी!) यदि आप उन्हें उस समय देखेंगे, जब वह नरक के समीप खड़े किये जायेंगे, तो वह कामना कर रहे होंगे कि ऐसा होता कि हम संसार की ओर फेर दिये जाते और अपने पालनहार की आयतों को नहीं झुठलाते, और हम ईमान वालों में हो जाते।
28. बल्कि उन के लिये वह बात खुल जायेगी, जिसे वह इस से पहले छुपा रहे थे<sup>[1]</sup>, और यदि संसार में फेर दिये जायें, तो फिर वही करेंगे जिस से रोके गये थे। वास्तव में वह है ही झूठे।
29. तथा उन्होंने कहा कि: जीवन बस हमारा संसारिक जीवन है और हमें फिर जीवित होना<sup>[2]</sup> नहीं है।
30. तथा यदि आप उन्हें उस समय देखेंगे जब वह (प्रलय के दिन) अपने पालनहार के समक्ष खड़े किये जायेंगे, उस समय अल्लाह उन से कहेगा: क्या यह (जीवन) सत्य नहीं? वह कहेंगे: क्यों नहीं, हमारे पालनहार की शपथ! इस पर अल्लाह कहेगा: तो अब अपने कुफ्र करने की यातना चखो।
31. निश्चय वह क्षति में पड़ गये, जिन्होंने

وَلَوْ تَرَى إِذْ وَقْفُوا عَلَى النَّارِ فَقَالُوا لِيَقِنَّا أَنَّا مُرْدُونَ  
نَكْبَرَ بِإِيمَانِنَا وَنَكْلُونَ مِنَ الْمُؤْمِنِينَ ⑩

بَلْ بَدَأَاهُمْ مَا كَلَّوْا يَعْمَلُونَ مِنْ قَبْلِ وَلَوْرَدُوا  
لَعَادُوا إِلَيْهِمْ وَأَعْنَهُ وَإِنَّهُمْ لَكَذِبُونَ ⑪

وَقَالُوا إِنَّمَا هُوَ لِأَحْيَا شَنَّا الدُّنْيَا وَمَا نَحْنُ  
بِمُبْعُوثِينَ ⑫

وَلَوْ تَرَى إِذْ وَقْفُوا عَلَى رَبِّهِمْ قَالَ أَلَيْسَ هَذَا  
بِالْحَقِّ قَالُوا بَلْ وَرَبِّنَا قَالَ فَذُو قُوَّاتِ الْعَذَابِ  
يَسِّئُ مَا كُنَّتُمْ تَكْفُرُونَ ⑬

فَذُخِيرَ الَّذِينَ كَذَّبُوا بِلِقَاءَ اللَّهِ حَتَّىٰ إِذَا

- 1 अर्थात् जिस तथ्य को वह शपथ लेकर छुपा रहे थे कि हम मिश्रणवादी नहीं थे, उस समय खुल जायेगा। अथवा आप (सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम) को पहचानते हुये भी यह बात जो छुपा रहे थे, वह खुल जायेगी। अथवा द्विधावादियों के दिल का वह रोग खुल जायेगा, जिसे वह संसार में छुपा रहे थे। (तप्सीर इब्ने कसीर)
- 2 अर्थात् हम मरने के पश्चात् परलोक में कर्मों का फल भोगने के लिये जीवित नहीं किये जायेंगे।

ने अल्लाह से मिलने को झुठला दिया, यहाँ तक कि जब प्रलय अचानक उन पर आ जायेगी तो कहेंगे: हाय! इस विषय में हम से बड़ी चूंक हुई और वह अपने पापों का बोझ अपनी पीठों पर उठाये होंगे। तो कैसा बुरा बोझ है जिसे वह उठा रहे हैं।

32. तथा संसारिक जीवन एक खेल और मनोरंजन<sup>[1]</sup> है। तथा परलोक का घर ही उत्तम<sup>[2]</sup> है, उन के लिये जो अल्लाह से डरते हों, तो क्या तुम समझते<sup>[3]</sup> नहीं हो?

33. (हे नबी!) हम जानते हैं कि उन की बातें आप को उदासीन कर देती हैं, तो वास्तव में वह आप को नहीं झुठलाते, परन्तु यह अत्याचारी अल्लाह की आयतों को नकारते हैं।

34. और आप से पहले भी बहुत से रसूल झुठलाये गये। तो इसे उन्होंने सहन किया, और उन्हें दुख दिया गया, यहाँ तक कि हमारी सहायता आ गयी। तथा अल्लाह की बातों को कोई बदल नहीं<sup>[4]</sup> सकता, और आप के

1 अर्थात् साम्यिक और आस्थायी है।

2 अर्थात् स्थायी है।

3 आयत का भावार्थ यह है कि यदि कर्मों के फल के लिये कोई दूसरा जीवन न हो तो, संसारिक जीवन एक मनोरंजन और खेल से अधिक कुछ नहीं रह जायेगा। तो क्या यह संसारिक व्यवस्था इसी लिये की गयी है कि कुछ दिनों खेलो और फिर समाप्त हो जाये? यह बात तो समझ बूझ का निर्णय नहीं हो सकती। अतः एक दूसरे जीवन का होना ही समझ बूझ का निर्णय है।

4 अर्थात् अल्लाह के निर्धारित नियम को, कि पहले वह परीक्षा में डालता है, फिर

جَاءَ نَهْرُ السَّاعَةِ بَغْتَةً فَلَا يَمْكُرُونَ عَلَىٰ مَا كُنَّا فِيهَا وَهُوَ يَعْلَمُ أُولَئِكُمْ عَلَىٰ ظُهُورِهِمْ  
الْأَسَاءَ مَا يَرِدُونَ ⑩

وَمَا الْحِيَاةُ الدُّنْيَا إِلَّا لَيْلَةٌ وَهُوَ وَلِلَّهِ الْأَغْرِي  
خَيْرٌ لِلَّذِينَ يَقُولُونَ أَفَلَا يَعْقِلُونَ ⑪

قَدْ عَلِمْتَ إِنَّهُ لَيَحْزُنُكَ الَّذِينَ يَقُولُونَ قَاتِلُهُمْ  
لَا يَكِيدُ بُوكَ وَلِكُنَ الظَّالِمُونَ بِآيَتِ اللَّهِ  
يَعْجَدُونَ ⑫

وَلَقَدْ كَذَّبُ رُسُلٌ مِّنْ قَبْلِكَ فَصَبَرُوا عَلَىٰ مَا كُنَّا بِهَا أَوْ ذُو احْتِلَالٍ أَتَتْهُمْ نَصْرًا  
وَلَا مُبَدِّلٌ لِكَلِمَاتِ اللَّهِ وَلَقَدْ جَاءَكَ مِنْ  
شَبَائِي الْمُرْسَلِينَ ⑬

पास रसूलों के समाचार आ चुके हैं।

35. और यदि आप को उन की विमुखता भारी लग रही है, तो यदि आप से हो सके, तो धरती में कोई सुरंग खोज लें, अथवा आकाश में कोई सीढ़ी लगा लें, फिर उन के पास कोई निशानी (चमत्कार) ला दें, और यदि अल्लाह चाहे तो इन्हें मार्गदर्शन पर एकत्र कर दे। अतः आप कदापि अज्ञानों में न हो।

36. आप की बात वही स्वीकार करेंगे, जो सुनते हों, परन्तु जो मुर्दै हैं उन्हें तो अल्लाह<sup>[1]</sup> ही जीवित करेगा, फिर उसी की ओर फेरे जायेंगे।

37. तथा उन्हों ने कहा कि: नबी पर उस के पालनहार की ओर से कोई चमत्कार क्यों नहीं उतारा गया? आप कह दें कि अल्लाह इस का सामर्थ्य रखता है, परन्तु अधिकृतर लोग अज्ञान हैं।

38. धरती में विचरते जीव तथा अपने दो पंखों से उड़ते पक्षी तुम्हारी जैसी जातियाँ हैं, हम ने पुस्तक<sup>[2]</sup> में कुछ

सहायता करता है।

1 अर्थात् प्रलय के दिन उन की समाधियों से। आयत का भावार्थ यह है कि आप के सदुपदेश को वही स्वीकार करेंगे जिन की अन्तरात्मा जीवित हो। परन्तु जिन के दिल निर्जीव हैं तो यदि आप धरती अथवा आकाश से लाकर उन्हें कोई चमत्कार भी दिखा दें तब भी वह उन के लिये व्यर्थ होगा। यह सत्य को स्वीकार करने की योग्यता ही खो चुके हैं।

2 पुस्तक का अर्थ ((लौहे महफूज़)) है जिस में सारे संसार का भाग्य लिखा हुआ है।

فَلَمْ كَانَ كَبُورٌ عَلَيْكَ إِغْرَاصٌ هُمْ فَإِنْ أَسْتَطَعْتَ  
أَنْ تَبْيَقَ نَقْلًا فِي الْأَرْضِ أَوْ سُلْمَانًا فِي السَّمَاءِ  
فَتَأْتِيهِمْ بِأَيْمَانِهِ وَلَوْسَادَ لَهُ لِجَمِيعِهِمْ عَلَى الْهُدَى  
فَلَا تَنْهَا نَفْنَفَ مِنَ الْجِهَلِينَ ⑩

إِنَّمَا يَتَّحِيدُ الَّذِينَ يَسْمَعُونَ وَالْمُؤْمِنُونَ يَعْثَمُونَ اللَّهُ  
نَّهَى إِنَّمَا يُرْجَمُونَ ١٠

وَقَالُوا نَلَوْلَرُ لَعَلَيْهِ أَيْهَا مِنْ رَبِّهِ قُلْ إِنَّ اللَّهَ  
قَادِرٌ عَلَى أَنْ يُنْزِلَ أَيْهَا وَلَكِنَ الْكَرْهُ  
لِأَيْمَلْمُونَ ⑩

وَمَا مِنْ دَآبَةٍ فِي الْأَرْضِ وَلَا طَيْرٌ  
يَعْنَاهُمْ إِلَّا مَا أَنْتَ الَّذِي مَا فَرَّطْنَا فِي الْأَنْبِيَاءِ مِنْ

कमी नहीं की<sup>[1]</sup> है, फिर वह अपने पालनहार की ओर ही एकत्र किये<sup>[2]</sup> जायेंगे।

39. तथा जिन्हों ने हमारी निशानियों को झुठला दिया, वह गूँगे, बहरे, अंधेरों में हैं। जिसे अल्लाह चाहता है कुपथ करता है, और जिसे चाहता है सीधी राह पर लगा देता है।
40. (हे नबी!) उन से कहो कि यदि तुम पर अल्लाह का प्रकोप आ जाये अथवा तुम पर प्रलय आ जाये, तो क्या तुम अल्लाह के सिवा किसी और को पुकारोगे, यदि तुम सच्चे हो?
41. बल्कि तुम उसी को पुकारते हो, तो वह दूर करता है उस को जिस के लिये तुम पुकारते हो, यदि वह चाहे, और तुम उसे भूल जाते हो, जिसे साझी<sup>[3]</sup> बनाते हो।
42. और आप से पहले भी समुदायों की

- 1 इन आयतों का भावार्थ यह है कि यदि तुम निशानियों और चमत्कार की माँग करते हो, तो यह पूरे विश्व में जो जीव और पक्षी हैं, जिन के जीवन साधनों की व्यवस्था अल्लाह ने की है, और सब के भाग्य में जो लिख दिया है, वह परा हो रहा है। क्या तुम्हारे लिये अल्लाह के अस्तित्व और गुणों के प्रतीक नहीं हैं? यदि तुम ज्ञान तथा समझ से काम लो, तो यह विश्व की व्यवस्था ही ऐसा लक्षण और प्रमाण है कि जिस के पश्चात् किसी अन्य चमत्कार की आवश्यकता नहीं रह जाती।
- 2 अर्थ यह है सब जीवों के प्राण मरने के पश्चात् उसी के पास एकत्रित हो जाते हैं क्यों कि वही सब का उत्पत्तिकार है।
- 3 इस आयत का भावार्थ यह है कि किसी घोर आपदा के समय तुम्हारा अल्लाह ही को गुहारना स्वयं तुम्हारी ओर से उस के अकेले पूज्य होने का प्रमाण और स्वीकार है।

شَقِّ نُحْرَ إِلَى رَيْهُمْ يُحْسِرُونَ<sup>[4]</sup>

وَالَّذِينَ لَدُنْ بُوَايَاتِنَ أَضْمَمْ وَلَبَقْنَ الْفُلْمَتِ مَنْ  
يَسِّرَ اللَّهُ بِصَلَةِ وَمَنْ يَسِّرْ بِجَهَنَّمَ عَلَى صَرَاطِ  
مَسْقَيْهِ<sup>[5]</sup>

قُلْ أَرْعَيْكُمْ إِنْ أَشْكُ عَذَابَ اللَّهِ أَوْ أَنْشَأْتُمُ  
السَّاعَةَ أَغْيَرَ اللَّهُ تَدْعُونَ إِنْ كُنْتُمْ صَادِقِينَ<sup>[6]</sup>

بَلْ رَأَيْتُمْ عُوْنَ مَيْكِنْشِفْ مَائِدَ عُوْنَ إِلَيْهِ إِنْ  
شَاءُ وَنَسَوْنَ مَاثِرِيْلُونَ<sup>[7]</sup>

وَلَقَدْ أَرْسَلْنَا إِلَيْكُمْ فَيْلَكَ فَأَخْذَنَمْ بِالْأَبْلَكَ<sup>[8]</sup>

ओर हम ने रसूल भेजे, तो हम ने उन्हें आपदाओं और दुखों में डाला<sup>[1]</sup>, ताकि वह विनय करें।

وَالْفَرَّارُ لَعَلَّهُمْ يَتَّقَرَّبُونَ ⑩

43. तो जब उन पर हमारी यातना आई, तो वह हमारे समक्ष झुक क्यों नहीं गये? परन्तु उन के दिल और भी कड़े हो गये, तथा शैतान ने उन के लिये उन के कुकर्मा को सुन्दर बना<sup>[2]</sup> दिया।

فَلَوْلَا إِذْ جَاءَهُمْ بِأُسْنَاتِ نَصْرَهُ وَلَكِنْ فَسْتُ  
فَلَوْلَاهُمْ وَرَبِّيْنَ لَهُمُ الشَّيْطَانُ مَا كَانُوا يَعْلَمُونَ ⑪

44. तो जब उन्होंने उसे भुला दिया जो याद दिलाये गये थे, तो हम ने उन पर प्रत्येक (सुख सुविधा) के द्वार खोल दिये। यहाँ तक कि जब जो कुछ वह दिये गये उस से प्रफुल्ल हो गये, तो हम ने उन्हें अचानक घेर लिया, और वह निराश हो कर रह गये।

فَلَمَّا نَسُوا مَا ذُكِرَوا بِهِ فَتَعْنَى عَلَيْهِمْ أَبُوابُ  
كُلِّ شَيْءٍ حَتَّى إِذَا أَفْرَحْنَاهُمْ أَوْ نُؤَا  
أَخْدَنَاهُمْ بِغَنَّةٍ فَإِذَا هُمْ مُبْلِسُونَ ⑫

45. तो उन की जड़ काट दी गई जिन्होंने अत्याचार किया, और सब प्रशंसा अल्लाह ही के लिये है। जो पूरे विश्व का पालनहार है।

فَقُطِعَ دَابُرُ الْقَوْمِ الَّذِينَ ظَلَمُوا وَالْحَمْدُ لِلَّهِ  
رَبِّ الْعَالَمِينَ ⑬

46. (हे नबी!) आप कहें कि क्या तुमने इस पर भी विचार किया कि यदि अल्लाह तुम्हारे सुनने तथा देखने की शक्ति छीन ले, और तुम्हारे दिलों पर मुहर लगा दे, तो अल्लाह के सिवा कौन है जो तुम्हें इसे वापस दिला सके? देखो, हम कैसे बार बार आयतें<sup>[3]</sup> प्रस्तुत कर रहे हैं। फिर भी

فُلَّأَرَءَيْتُمْ إِنْ أَخَذَ اللَّهُ سَمْعَكُمْ وَأَنْصَارَكُمْ  
وَخَلَمَ عَلَىٰ فَلَوْلَكُمْ مِنَ اللَّهِ غَيْرُ اللَّهِ يَأْتِيكُمْ بِهِ النُّظُرُ  
كَيْفَ تُصَرِّفُ الْأَيْتَ ثُمَّ هُمْ يَصْدِقُونَ ⑯

1 अर्थात् ताकि अल्लाह से विनय करें, और उस के सामने झुक जायें।

2 आयत का अर्थ यह है कि जब कुकर्मा के कारण दिल कड़े हो जाते हैं, तो कोई भी बात उन्हें सुधार के लिये तथ्यार नहीं कर सकती।

3 अर्थात् इस बात की निशानियाँ की अल्लाह ही पूज्य है, और दूसरे सभी पूज्य

वह मुँह<sup>[1]</sup> फेर रहे हैं।

47. आप कहें कि कभी तुम ने इस बात पर विचार किया कि यदि तुम पर अल्लाह की यातना अचानक या खुल कर आ जाये, तो अत्याचारियों (मुशरिकों) के सिवा किस का विनाश होगा?
48. और हम रसूलों को इसी लिये भेजते हैं कि वह (आज्ञाकारियों को) शुभ सुचना दें। तथा (अवैज्ञाकारियों को) डरायें। तो जो ईमान लाये तथा अपने कर्म सुधार लिये, उन के लिये कोई भय नहीं, और न वह उदासीन होंगे।
49. और जिन्हों ने हमारी आयतों को झुठलाया, उन्हें अपनी अवैज्ञा के कारण यातना अवश्य मिलेगी।
50. (हे नबी!) आप कह दें कि मेरे पास अल्लाह का कोष नहीं है, और न मैं परोक्ष का ज्ञान रखता हूँ, तथा न मैं यह कहता कि मैं कोई फरिश्ता हूँ। मैं तो केवल उसी पर चल रहा हूँ जो मेरी ओर वही (प्रकाशना) की जा रही है। आप कहें कि क्या अन्धा<sup>[2]</sup> तथा आँख वाला बराबर हो जायेगे? क्या तुम सोच विचार नहीं करते?
51. और इस (वही द्वारा) उन को सचेत करो, जो इस बात से डरते हों कि

मिथ्या हैं। (इन्हे कसीर)

1 अर्थात् सत्य से।

2 अन्धा से अभिप्रायः सत्य से विचलित है। इस आयत में कहा गया है कि नबी, मानव पुरुष से अधिक और कुछ नहीं होता। वह सत्य का अनुयायी तथा उसी का प्रचारक होता है।

قُلْ أَرَيْتَ كُمْ رُبْ أَشْكُمْ عَذَابُ اللَّهِ بَقِيَةً  
أَوْ جَهَنَّمَ هَلْ يُهْلِكُ إِلَّا الْقَوْمُ الظَّلِمُونَ ﴿٥﴾

وَمَا رُسِّلُ الْمُرْسَلُونَ إِلَّا مُبَشِّرُونَ وَمُنذِّرُونَ  
فَمَنْ أَمَنَ وَأَصْلَحَ فَلَأُخْفُفُ عَلَيْهِمْ وَلَا هُمْ  
يَعْزَزُونَ ﴿٦﴾

وَالَّذِينَ كَذَّبُوا بِآيَاتِنَا يَمْسِكُهُمُ الْعَذَابُ  
بِمَا كَانُوا يَفْسُدُونَ ﴿٧﴾

قُلْ لَا أَقُولُ لَكُمْ عِنْدِي خَلَقْنَا اللَّهُ وَلَا أَعْلَمُ  
الغَيْبَ وَلَا أَقُولُ لَكُمْ إِنَّ مَلَكَنَا إِنَّا أَنْتُمْ إِلَّا مَا  
يُوْحَى إِلَيْنَا هَلْ يَسْتَوِي الْأَعْنَى وَالْبُصِيرُ  
أَفَلَا تَتَفَكَّرُونَ ﴿٨﴾

وَأَنْذِرْ رِبِّ الْأَنْبِيَاءَ نَجَّافُونَ أَنْ يَحْسِرُوا إِلَى

वे अपने पालनहार के पास (प्रलय के दिन) एकत्र किये जायेंगे, इस दशा में कि अल्लाह के सिवा कोई सहायक तथा अनुशंसक (सिफारशी) न होगा, संभवतः वह आज्ञाकारी हो जायें।

52. (हे नबी!) आप उन्हें अपने से दूर न करें जो अपने पालनहार की वंदना प्रातः संध्या करते उस की प्रसन्नता की चाह में लगे रहते हैं। उन के हिसाब का कोई भार आप पर नहीं है और न आप के हिसाब का कोई भार उन पर<sup>[1]</sup> है, अतः यदि आप उन्हें दूर करेंगे, तो अत्याचारियों में हो जायेंगे।

53. और इसी प्रकार<sup>[2]</sup> हम ने कुछ लोगों की परीक्षा कुछ लोगों द्वारा की है, ताकि वह कहें कि क्या यही है जिन पर हमारे बीच से अल्लाह ने उपकार किया<sup>[3]</sup> है? तो क्या अल्लाह कृतज्ञों को भली भाँति जानता नहीं है?

54. तथा (हे नबी!) जब आप के पास वह लोग आयें, जो हमारी आयतों (कुर्�आन) पर इमान लाये हैं तो आप कहें कि तुम<sup>[4]</sup> पर सलाम (शान्ति)

رَبِّهِمْ لَيْسَ لَهُمْ مِنْ دُونِهِ وَلِيْلَ وَلَا  
شَفِيعٌ لَعَلَّهُمْ يَتَعَوَّنُ ⑥

وَلَا نَظِرٌ إِلَى الَّذِينَ يَدْعُونَ رَبَّهُمْ بِالْغَدَوَةِ  
وَالْعَيْنِي يُرِيدُونَ وَجْهَهُ مَا أَعْلَمُ مِنْ  
حَسَابِهِمْ مِنْ شَيْءٍ وَمَا مِنْ حَسَابٍ عَلَيْهِمْ  
مِنْ شَيْءٍ فَمَظْرُدُهُمْ قَاتِلُونَ مِنَ الظَّالِمِينَ ⑦

وَكَذَلِكَ قَدَّا بَعْضَهُمْ بِعِصْلٍ لِيُقْتَلُوا أَهْلَهُمْ  
مِنَ اللَّهِ عَلَيْهِمْ مِنْ بَيْنِنَا إِلَيْسَ اللَّهُ بِأَعْلَمُ  
بِالشَّكَرِينَ ⑧

وَلَا جَاءَ لِكُلِ الْأَذْنِينَ يُؤْمِنُونَ بِاِيْتَنَا فَقُلْ سَلَامٌ  
عَلَيْكُمْ كَتَبَ رَبُّكُمْ عَلَى نَفْسِهِ الرَّحْمَةُ أَنَّهُ مِنْ  
عِمَلِ مِنْكُمْ سُوءٌ إِبْرَهَالُهُ ثُرَّتَابٌ مِنْ بَعْدِهِ ⑨

1 अर्थात् न आप उन के कर्मों के उत्तरदायी हैं, न वे आप के कर्मों के रिवायतों से विद्वित होता है कि मक्का के कुछ धनी मिश्रणवादियों ने नबी सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम से कहा कि हम आप की बातें सुनना चाहते हैं। किन्तु आप के पास नीच लोग रहते हैं, जिन के साथ हम नहीं बैठ सकते। इसी पर यह आयत उतरी। (इब्ने कसीर)। हीस में है कि अल्लाह, तुम्हारे रूप और वस्त्र नहीं देखता किन्तु तुम्हारे दिलों और कर्मों को देखता है। (सहीह मुस्लिम- 2564)

2 अर्थात् धनी और निर्धन बना करा

3 अर्थात् मार्ग दर्शन प्रदान किया।

4 अर्थात् उन के सलाम का उत्तर दें, और उन का आदर सम्मान करें।

है। अल्लाह ने अपने ऊपर दया अनिवार्य कर ली है कि तुम में से जो भी अज्ञानता के कारण कोई कुकर्म कर लेगा, फिर उस के पश्चात् तौबा (क्षमा याचना) कर लेगा, और अपना सुधार कर लेगा तो निश्चिह्न अल्लाह अति क्षमाशील दयावान् है।

55. और इसी प्रकार हम आयतों का वर्णन करते हैं, और इस के लिये ताकि अपराधियों का पथ उजागर हो जाये (और सत्यवादियों का पथ संदिग्ध न हो।)
56. (हे नबी!) आप (मुश्ऱिरियों से) कह दें कि मुझे रोक दिया गया है कि मैं उन की बंदना करूँ जिन्हें तुम अल्लाह के सिवा पुकारते हो। उन से कह दो कि मैं तुम्हारी आकांक्षाओं पर नहीं चल सकता। मैं ने ऐसा किया तो मैं सत्य से कुपथ हो गया, और मैं सुपथों में से नहीं रह जाऊँगा।
57. आप कह दें कि मैं अपने पालनहार के खुले तर्क पर स्थित<sup>[1]</sup> हूँ और तुम ने उसे झुठला दिया है। जिस (निर्णय) के लिये तुम शीघ्रता करते हो, वह मेरे पास नहीं। निर्णय तो केवल अल्लाह के अधिकार में है। वह सत्य को वर्णित कर रहा है। और वह सर्वोत्तम निर्णयकारी है।

<sup>1</sup> अर्थात् सत्यर्थ पर जो वहीं द्वारा मुझ पर उतारा गया है। आयत का भावार्थ यह है कि वहीं (प्रकाशना) की राह ही सत्य और विश्वास तथा ज्ञान की राह है। और जो उसे नहीं मानते उन के पास शंका और अनुमान के सिवा कुछ नहीं।

وَأَصْلَحَ قَاتِلَهُ عَفْوَ رَحْمَةً

وَلَذِكْرِكَ تُقْصِلُ الْأَلْيَتْ وَلَسَبَّيْنَ سَبِيلْ  
الْمُجْرِمِينَ

فُلُّ إِنِّي نُهِيَتُ أَنْ أَعْبُدَ الَّذِينَ تَدْعُونَ مِنْ  
دُونِ اللَّهِ فُلُّ لَا أَتَيْمُ أَهْوَاءَ كُلِّهِ قَدْ ضَلَّتْ إِذَا  
وَمَا أَنَا مِنَ الْمُهْتَدِينَ

فُلُّ إِنِّي عَلَىٰ بَيْنَهُ مِنْ رَبِّي وَكَذَبْتُمْ يَهُ مَا  
عَنِيدُ مَا تَشَعَّجُونَ بِهِ إِنَّ الْحَمْدَ لِإِلَهِ  
يَقْضُ الْحَقَّ وَهُوَ خَيْرُ الْفَقِيلِينَ

58. आप कह दें कि जिस (निर्णय) के लिये तुम शीघ्रता कर रहे हो, मेरे अधिकार में होता तो हमारे और तुम्हारे बीच निर्णय हो गया होता। तथा अल्लाह अत्यचारियों<sup>[1]</sup> को भलि भाँति जानता है।
59. और उसी (अल्लाह) के पास गैब (परोक्ष) की कुंजियाँ<sup>[2]</sup> हैं। उन्हें केवल वही जानता है। तथा जो कुछ थल और जल में है, वह सब का ज्ञान रखता है। और कोई पत्ता नहीं गिरता परन्तु उसे वह जानता है। और न कोई अब जो धरती के अंधेरों में हो, और न कोई आद्र (भीगा) और शुष्क (सखा) है परन्तु वह एक खुली पुस्तक में है।
60. वही है जो रात्रि में तुम्हारी आत्माओं को ग्रहण कर लेता है, तथा दिन में जो कुछ किया है उसे जानता है। फिर तुम्हें उस (दिन) में जगा देता है, ताकि निर्धारित अवधि पूरी हो जाये।<sup>[3]</sup> फिर तुम्हें उसी की ओर प्रत्यागत (बापस) होना है। फिर वह तुम्हें तुम्हारे कर्मों से सूचित कर देगा।
61. तथा वही है, जो अपने सेवकों पर पूरा अधिकार रखता है, और तुम पर

قُلْ لَوْاَنْ عِنْدِي مَا تَسْعَى لَوْلَىٰنْ بِهِ لَقْضَى  
الْأَمْرُ بِيَنِي وَبَيْنَكُمْ وَإِنَّهُ أَعْلَمُ بِالظَّالِمِينَ<sup>①</sup>

وَعِنْدَكُمْ مَا فَلَحُ الْغَيْبُ لَا يَعْلَمُ بِأَنْتِ  
الْبَرُّ وَالْبَرْ وَمَا تَفْعَلُ مِنْ وَرَقَةٍ لَا يَعْلَمُ بِأَنْتِ  
ظَلَمْتَ الْأَرْضَ وَلَا طَبَّ وَلَا يَابِسَ الْأَرْضَ كُلُّ  
مُبِينٍ<sup>②</sup>

وَهُوَ الَّذِي يَتَوَمَّلُ بِأَيْمَانِكُمْ وَيَعْلَمُ مَا جَرَحَتُمْ  
بِالنَّهَارِ ثُمَّ يَبْعَثُكُمْ فِيهِ لِيَقْضِي أَجَلَ مُسَيَّرٍ  
إِلَيْهِ مَرْجِعُكُمْ لَئِنْ يُتَشَمَّرُ بِهَا إِنَّمَا تَعْمَلُونَ<sup>③</sup>

وَهُوَ الْقَاهِرُ فَوْقَ عِبَادَةِ وَيُرِسُّ عَلَيْكُمْ حَفَظَةٌ

1 अर्थात् निर्णय का अधिकार अल्लाह को है, जो उस के निर्धारित समय पर हो जायेगा।

2 सहीह हदीस में है कि गैब की कुंजियाँ पाँच हैं: अल्लाह ही के पास प्रलय का ज्ञान है। और वही वर्षा करता है। और जो गर्भाशयों में है उस को वही जानता है। तथा कोई जीव नहीं जानता कि वह कल क्या कमायेगा। और न ही यह जानता है कि वह किस भूमि में मरेगा। (सहीह बुखारी- 4627)

3 अर्थात् संसारिक जीवन की निर्धारित अवधि।

रक्षकों<sup>[1]</sup> को भेजता है। यहाँ तक कि जब तुम में से किसी के मरण का समय आ जाता है तो हमारे फरिश्ते उस का प्राण ग्रहण कर लेते हैं और वह तनिक भी आलस्य नहीं करते।

حَتَّىٰ إِذَا جَاءَ أَحَدًا لِكُلِّ الْمُوْتَ تَوَفَّهُ رُسُلُنَا وَهُمْ لَا يُفَرِّطُونَ ⑩

62. फिर सब अल्लाह, अपने वास्तविक स्वामी की ओर वापिस लाये जाते हैं सावधान! उसी को निर्णय करने का अधिकार है। और वह अति शीघ्र हिसाब लेने वाला है।

لَهُ دُوَّارٌ إِلَيْهِ مُوْلِيهِمُ الْحَقِيقَةُ الْأَكْلَمُ وَهُوَ أَسْرَعُ الْحَسِينِ ⑪

63. हे नबी! उन से पूछिये कि थल तथा जल के अंधेरों में तुम्हें कौन बचाता है, जिसे तुम विनय पूर्वक और धीरे धीरे पुकारते हो कि यदि उस ने हमें बचा दिया, तो हम अवश्य कृतज्ञों में हो जायेंगे?

قُلْ مَنْ يُتَبَعِّيْكُمْ مِنْ ضَلَّلَتِ الْبَرَّ وَالْجَنَّةَ عَوْنَةٌ تَضَعُّعًا وَخَفْيَةٌ لِمَنْ أَجْهَمْنَا مِنْ هُنْدٍ كَلْنَوْنَ مِنْ الشَّرِّكَرِنِ ⑫

64. आप कह दें कि अल्लाह ही उस से तथा प्रत्येक आपदा से तुम्हें बचाता है। फिर भी तुम उस का साझी बनाते हो।

قُلِ اللَّهُ يَنْهَا كُلُّهُ مِنْهَا وَمِنْ كُلِّ كُوْبِثُرٍ أَنْتُمْ شَرِّكُونَ ⑬

65. आप उन से कह दें कि वह इस का सामर्थ्य रखता है कि वह कोई यातना तुम्हारे ऊपर (आकाश) से भेज दे अथवा तुम्हारे पैरों के नीचे (धरती) से, या तुम्हें सम्प्रदायों में कर के एक को दूसरे के आक्रमण<sup>[2]</sup> का स्वाद चखा दे। देखिये कि हम किस प्रकार

قُلْ هُوَ الْقَادِرُ عَلَىٰ لَمْ يَبْعَثْ عَلَيْكُمْ عَذَابًا إِنْ فَوْقَكُمْ أَوْ مِنْ تَحْتِكُمْ أَوْ يُلْسِكُمْ شَيْئًا وَيُنْزِلُكُمْ بَعْضَكُمْ بَأْسًا بَعْضُ الظَّرَبِ كَيْفَ أُصِرُّ إِلَيْتُ لَعْنَهُ حِفْقَهُونَ ⑭

1 अर्थात् फरिश्तों को तुम्हारे कर्म लिखने के लिये।

2 हदीस में है कि नबी (सल्लल्लाहू अलैहि व सल्लम) ने अपनी उम्मत के लिये तीन दुआएँ कीः मेरी उम्मत का विनाश ढूब कर न हो। साधारण आकाल से न हो। और आपस के संघर्ष से न हो। तो पहली दो दुआ स्वीकार हुईं और तीसरी से आप को रोक दिया गया। (बुखारी- 2216)

आयतों का वर्णन कर रहे हैं कि  
संभवतः वह समझ जायें।

66. और (हे नबी!) आप की जाति ने इस (कुर्�আন) को झुठला दिया, जब कि वह सत्य है। और आप कह दें कि मैं तुम पर अधिकारी नहीं<sup>[1]</sup> हूँ।
67. प्रत्येक सुचना के पूरे होने का एक निश्चित समय है, और शीघ्र ही तुम जान लोगों।
68. और जब आप उन लोगों को देखें जो हमारी आयतों में दोष निकालते हों तो उन से विमुख हो जायें, यहाँ तक कि वह किसी दूसरी बात में लग जायें। और यदि आप को शैतान भुला दे तो याद आ जाने के पश्चात् अत्याचारी लोगों के साथ न बेठें।
69. तथा उन<sup>[2]</sup> के हिसाब में से कुछ का भार उन पर नहीं है जो अल्लाह से डरते हों, परन्तु याद दिला<sup>[3]</sup> देना उन का कर्तव्य है, ताकि वह भी डरने लगे।
70. तथा आप उन्हें छोड़ें जिन्होंने अपने धर्म को क्रीड़ा और खेल बना लिया है। और संसारिक जीवन ने उन्हें धोखे में डाल रखा है। और इस (कुर्�আন) द्वारा उन्हें शिक्षा दें। ताकि कोई प्राणी अपने कर्तृतों के कारण बंधक

1 कि तुम्हें बलपूर्वक मनवाऊँ। मेरा दायित्व केवल तुम को अल्लाह का आदेश पहुँचा देना है।

2 अर्थात् जो अल्लाह की आयतों में दोष निकालते हैं।

3 अर्थात् समझा देना।

وَكَذِبَ بِهِ قَوْمٌ وَهُوَ الْحَقُّ قُلْ أَسْتُ عَلَيْكُمْ  
بِوَكْلٍ<sup>①</sup>

لِكُلِّ نَبِيٍّ مُسَعِّرٍ وَسَوْفَ تَعْلَمُونَ

وَإِذَا رَأَيْتُ الَّذِينَ يَخْوُضُونَ فِي الْيَمَنَ فَأَغْرِضْ  
عَنْهُمْ حَتَّى يَخْوُضُوا فِي حَدِيبِيَّةٍ وَإِمَّا  
يُبَيِّنَنَّ الشَّيْطَانُ فَلَا يَقْعُدُ بَعْدَ الدِّكْرِ مَعَ  
الْقَوْمِ الظَّلِيمِينَ<sup>②</sup>

وَمَاعَلَ الَّذِينَ يَعْقُونَ مِنْ حِسَابِهِمْ مِنْ شَيْءٍ  
وَلَكِنْ ذَكْرِي لَعَلَّهُمْ يَعْقُونَ<sup>③</sup>

وَذَرِ الَّذِينَ اخْدُوا دِينَهُمْ لَوْبَا وَلَهُوا وَغَرْبَهُ  
الْعَيْبَةُ الدُّنْيَا وَذَرْرَبَهُ أَنْ تُبْسَلَ نَفْسٌ إِيمَانًا  
كَبَتْ لَيْسَ لَهَا مِنْ دُونِ اللَّهِ وَلَيْسَ لَهَا سَفَيْرٌ  
وَإِنْ تَعْدِلْ كُلُّ عَدْلٍ لَا يُؤْخَذُ مِنْهَا أُولَئِكَ  
الَّذِينَ أَبْسُلُوا إِيمَانًا كَسِبُوا الْهُرُمَاتِ وَمِنْ حَمْبِلِهِمْ

न बन जाये, जिस का अल्लाह के सिवा कोई सहायक और अभिस्तावक (सिफारशी) न होगा। और यदि वह सब कछु बदले में दें तो भी उन से नहीं लिया जायेगा।<sup>[1]</sup> यही लोग अपने कर्तृतों के कारण बंधक होंगे। उन के लिये उन के कुफ्र (अविश्वास) के कारण खौलता पेय तथा दुखदायी यातना होगी।

71. हे नबी! उन से कहिये कि क्या हम अल्लाह के सिवा उन की वंदना करें जो हमें कोई लाभ और हानि नहीं पहुँचा सकते? और हम एड़ियों के बल फिर जायें, इस के पश्चात जब हमें अल्लाह ने मार्गदर्शन दे दिया है, उस के समान जिसे शैतानों ने धरती में बहका दिया हो, वह आश्चर्य चकित हो, उस के साथी उस को पुकार रहे हों कि सीधी राह की ओर हमारे पास आ जाओ?<sup>[2]</sup> आप कह दें कि मार्गदर्शन तो वास्तव में वही है जो अल्लाह का मार्ग दर्शन है। और हमें तो यही आदेश दिया गया कि हम विश्व के पालनहार के आज्ञाकारी हो जायें।
72. और नमाज की स्थापना करें, और उस से डरते रहें। तथा वही है जिस के पास तुम एकत्रित किये जाओगे।

وَعَدَ اللَّهُ بِمَا كَانُوا يَكْفُرُونَ

فُلَانْ أَنَّدْ خُوَادِنْ دُوْنِ اللَّهِ مَا لَيْتَ نَقْعَدْنَا وَلَا  
يَضْرَبْنَا وَلَا رُدْعَلْ أَعْقَابِنَا بَعْدَ رَدْهَدَسْنَا اللَّهُ  
كَالَّذِي أَسْهَوَتْهُ الشَّيْطَنُ فِي الْأَرْضِ حَيْرَانْ  
لَهُ أَحَبُّ يَدْعُونَهُ إِلَى الْهُدَى افْتَنَانْ فُلَانْ  
هُدَى اللَّهُ هُوَ الْهُدَى وَأَمْرَنَا إِلَيْهِ لِوَتْ  
الْعَلَمَيْنِ

وَإِنْ أَقِيمُوا الْقَسْلَوَةَ وَإِنْ قُوَّهُ وَهُوَ الَّذِي  
إِلَيْهِ يُخْتَرُونَ

1 संसारिक दण्ड से बचाव के लिये तीन साधनों से काम लिया जाता हैः मैत्री, सिफारिश और अर्थदण्ड। परन्तु अल्लाह के हाँ ऐसे साधन किसी काम नहीं आयेंगे। वहाँ केवल ईमान और सत्कर्म ही काम आयेंगे।

2 इस में कुफ्र और ईमान का उदाहरण दिया गया है कि ईमान की राह निश्चित है। और अविश्वास की राह अनिश्चित तथा अनेक है।

73. और वही है, जिस ने आकाशों तथा धरती की रचना सत्य के साथ की<sup>[1]</sup> है। और जिस दिन वह कहेगा कि "हो जा" तो वह (प्रलय) हो जायेगी। उस का कथन सत्य है। और जिस दिन नरसिंधा में फूँक दिया जायेगा उस दिन उसी का राज्य होगा। वह परोक्ष तथा<sup>[2]</sup> प्रत्यक्ष का ज्ञानी है। और वही गुणी सर्वसूचित है।
74. तथा जब इब्राहीम ने अपने पिता आज़र से कहा: क्या आप मूर्तियों को पूज्य बनाते हैं? मैं आप को तथा आप की जाति को खुले कुपथ में देख रहा हूँ।
75. और इब्राहीम को इसी प्रकार हम आकाशों तथा धरती के राज्य की व्यवस्था दिखाते रहे, और ताकि वह विश्वासियों में हो जाये।
76. तो जब उस पर रात छा गयी, तो उस ने एक तारा देखा। कहा: यह मेरा पालनहार है। फिर जब वह डूब गया, तो कहा मैं डूबने वालों से प्रेम नहीं करता।
77. फिर जब उस ने चाँद को चमकते देखा तो कहा: यह मेरा पालनहार है। फिर जब वह डूब गया तो कहा: यदि मझे मेरे पालनहार ने मार्गदर्शन नहीं दिया तो मैं अवश्य कुपथों में से हो जाऊँगा।
78. फिर जब (प्रातः) सूर्य को चमकते

وَهُوَ الِّذِي خَلَقَ السَّمَاوَاتِ وَالْأَرْضَ بِالْحَقِيقَىٰ  
وَيَوْمَ يَقُولُ لِئَنْ قَيَّمْتُكُمْ بِقَوْلِهِ الْحَقِيقَىٰ وَلَهُ  
الْمُلْكُ يَوْمَ يُنَزَّهُ فِي الصُّورِ عِلْمُ الْغَيْبِ  
وَالشَّهَادَةُ وَهُوَ الْعَلِيمُ الْجَيْمُ<sup>[3]</sup>

وَلَذِكْرِي إِبْرَاهِيمَ لِأَيْمَانِهِ ازْرَأَتْجَدَ أَصْنَامًا  
الْهَمَةُ إِلَيْيَ آرِيكَ وَقَوْمَكَ فِي صَلَلٍ مُّبِينٍ<sup>[4]</sup>

وَكَذَلِكَ ثُرِيَ إِبْرَاهِيمَ مَلْكُوتَ السَّمَاوَاتِ وَالْأَرْضِ  
وَلَيَكُونُ مِنَ الْمُؤْفِقِينَ<sup>[5]</sup>

فَلَمَّا جَاءَنَّ عَلَيْهِ الْيَوْمُ رَأَى كُوَبَّاً قَالَ هَذَا رَبِّيٌّ  
فَلَمَّا آفَلَ قَالَ لَا أَحُبُّ الْأَفَلِينَ<sup>[6]</sup>

فَلَمَّا أَتَى الْمُرْسَلَاتِ نَعْنَاعًا قَالَ هَذَا رَبِّيٌّ فَلَمَّا آفَلَ قَالَ  
لَئِنْ كُنْتُ بِهِ مِنْ رَّبِّي لَا كُوَنَّ مِنَ الْقَوْمِ  
الصَّالِحِينَ<sup>[7]</sup>

فَلَمَّا أَتَى النَّاسَ بِأَرْجَفَهُ قَالَ هَذَا الْكَبُورُ فَلَمَّا

1 अर्थात् विश्व की व्यवस्था यह बता रही है कि इस का कोई रचयिता है।

2 जिन चीजों को हम अपनी पाँच ज्ञान इन्द्रियों से जान लेते हैं वह हमारे लिये प्रत्यक्ष है, और जिन का ज्ञान नहीं कर सकते वह परोक्ष है।

देखा तो कहा यह मेरा पालनहार है।  
यह सब से बड़ा है। फिर जब वह  
भी डूब गया तो उस ने कहा: हे मेरी  
जाति के लोगो! निःसदेह मैं उस से  
विरक्त हूँ जिसे तुम (अल्लाह का)  
साझी बनाते हो।

79. मैं ने तो अपना मुख एकाग्र हो कर  
उस की ओर कर लिया है जिस ने  
आकाशों तथा धरती की रचना की  
है। और मैं मुशिरकों में से नहीं<sup>[1]</sup> हूँ।

80. और जब उस की जाति ने उस से  
वाद झगड़ा किया तो उस ने कहा  
क्या तुम अल्लाह के विषय में मुझ से  
झगड़ रहे हो, जब कि उस ने मुझे  
सुपथ दिखा दिया है। तथा मैं उस से  
नहीं डरता हूँ जिसे तुम साझी बनाते  
हो। परन्तु मेरा पालनहार कुछ चाहे  
(तभी वह मुझे हानि पहुँचा सकता  
है।) मेरा पालनहार प्रत्येक वस्तु को  
अपने ज्ञान में समोये हुये हैं। तो क्या  
तुम शिक्षा नहीं लेते?

81. और मैं उन से कैसे डरूँ जिन को  
तुम ने उस का साझी बना लिया है,  
जब तुम उस चीज़ को उस का साझी  
बनाने से नहीं डरते जिस का अल्लाह

۱۰۷۷ قَالَ يَقُولُونَ إِنَّ بِرِّيْ وَمَنَّا شَرِّكُوْنَ ۝

إِنَّ وَجْهَهُ وَجْهٌ لِلَّذِيْ قَطَرَ السَّمَوَاتِ وَالْأَرْضَ  
حَتَّىٰ وَمَا أَنَّا مِنَ الْمُشَرِّكِينَ ۝

وَحَاجَةً قَوْمَهُ قَالَ أَتَحَاجِجُوْنِ فِي اللَّهِ وَقَدْ  
هَدَنَا وَلَا يَخَافُ مَا شَرِّكُوْنَ يَهُ إِلَّا عُنْ يَتَاءُ رَبِّيْ  
شَيْئًا وَسِرَّيْنِ كُلُّ شَيْءٍ عِلْمَنَا أَفَلَا تَتَذَكَّرُوْنَ ۝

وَكَيْفَ أَخَانُ مَا شَرِّكُوْمُ وَلَا يَعْلَمُوْنَ أَنَّا  
أَشْرَكُوْمُ بِاللَّهِ مَا لَمْ يَرِيْلُ بِهِ عَلَيْكُمْ سُلْطَانًا فَإِنَّ  
الْقَرْيَعَيْنِ أَحَقُّ بِالْأُمْرِ إِنْ كُنْتُمْ تَعْلَمُوْنَ ۝

1 इब्राहीम अलैहिस्सलाम उस युग में नवी हुये जब बाबिल तथा नेनवा के निवासी आकाशीय ग्रहों की पूजा कर रहे थे। परन्तु इब्राहीम अलैहिस्सलाम पर अल्लाह ने सत्य की राह खोल दी। उन्होंने इन आकाशीय ग्रहों पर विचार किया तथा उन को निकलते और फिर डूबते देख कर यह निर्णय लिया कि यह किसी की रचना तथा उस के अधीन हैं। और इन का रचयिता कोई और है। अतः रचित तथा रचना कभी पूज्य नहीं हो सकती, पूज्य वही हो सकता है जो इन सब का रचयिता तथा व्यवस्थापक है।

ने तुम पर कोई तर्क (प्रमाण) नहीं  
उतारा है? तो दोनों पक्षों में कौन  
अधिक शान्त रहने का अधिकारी है,  
यदि तुम कुछ ज्ञान रखते हो?

82. जो लोग ईमान लाये, और अपने  
ईमान को अत्याचार (शिक्ष) से लिप्त  
नहीं<sup>[1]</sup> किया, उन्हीं के लिये शान्ति  
है, तथा वही मार्ग दर्शन पर है।

83. यह हमारा तर्क था, जो हम ने  
इब्राहीम को उस की जाति के विरुद्ध  
प्रदान किया, हम जिस के पदों<sup>[2]</sup> को  
चाहते हैं ऊँचा कर देते हैं वास्तव में  
आप का पालनहार गुणी तथा ज्ञानी है।

84. और हम ने इब्राहीम को (पुत्र)  
इसहाक तथा (पौत्र) याकूब प्रदान किये  
प्रत्येक को हम ने मार्गदर्शन दिया। और  
उस से पहले हम ने नूह को मार्गदर्शन  
दिया। और इब्राहीम की संतति में से  
दावूद तथा सुलैमान और अय्यूब तथा  
यसुफ और मूसा तथा हारून को।  
और इसी प्रकार हम सदाचारियों को  
प्रतिफल प्रदान करते हैं।

85. तथा ज़करिया और यह्या तथा  
ईसा और इल्यास को। यह सभी

الَّذِينَ آمَنُوا وَلَمْ يُلْسِوْ لِإِيمَانِهِمْ بِفُلُوْنَ أُولَئِكَ  
لَهُمُ الْأَمْرُ وَهُمْ مُهْتَدُونَ

وَيَنْكُمْ جَمِيعًا إِنَّمَا لِإِبْرَاهِيمَ عَلَىٰ قَوْمِهِ مُرَفُّ  
دَرَجَاتٍ مَّنْ شَاءَ رَبَّكَ حَكِيمٌ عَلَيْهِمْ

وَهَبَنَا لَهُ أَسْحَقَ وَنَعْوَبَ كُلَّا هَدَيْنَا  
وَنُؤْخَاهَدَنَا مِنْ قَبْلٍ وَمِنْ ذِرَيْتِهِ دَاؤَهُ  
وَسُلَيْمَانَ وَأَيُوبَ وَيُوسُفَ وَمُوسَى وَهُرُونَ  
وَكَذَلِكَ بَنْزَى الْمُحْسِنِينَ

وَزَكَرِيَا وَيَحْيَى وَعُصَمَى وَالْيَاسَ كُلُّ مِنَ الصَّالِحِينَ

1 हदीस में है कि जब यह आयत उतरी तो नबी सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम के साथियों ने कहा: हम में कौन है जिस ने अत्याचार न किया हो? उस समय यह आयत उतरी। जिस का अर्थ यह है कि निश्चय शिक्ष (मिश्रणवाद) ही सब से बड़ा अत्याचार है। (सहीह बुखारी-4629)

2 एक व्यक्ति नबी (सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम) के पास आया और कहा: हे सर्वोत्तम पुरुष! आप ने कहा: वह (सर्वोत्तम पुरुष) इब्राहीम (अलैहिस्सलाम) है। (सहीह मुस्लिम- 2369)

## सदाचारियों में से थे।

86. तथा इस्माईल और यसम तथा यूनुस और लूत को। प्रत्येक को हम ने संसार वासियों पर प्रधानता दी।
87. तथा उन के पूर्वजों और उन की संतति तथा उन के भाईयों को और हम ने इन सब को निर्वाचित कर लिया। और उन्हें सुपथ दिखा दिया था।
88. यही अल्लाह का मार्गदर्शन है जिस के द्वारा अपने भक्तों में से जिसे चाहे सुपथ दर्शा देता है। और यदि वह शिर्क करते, तो उन का सब किया धरा व्यर्थ हो जाता।<sup>[1]</sup>
89. (हे नबी!) यही वह लोग हैं जिन्हें हम ने पुस्तक तथा निर्णय शक्ति एवं नुबूवत प्रदान की। फिर यदि यह (मुशरिक) इन बातों को नहीं मानते तो हम ने इसे कुछ ऐसे लोगों को सौप दिया है जो इसका इन्कार नहीं करते।
90. (हे नबी!) यही वह लोग हैं जिन को अल्लाह ने सुपथ दर्शा दिया, तो आप भी उन्हीं के मार्गदर्शन पर चलें तथा कह दें कि मैं इस (कार्य)<sup>[2]</sup> पर तुम से कोई प्रतिदान नहीं माँगता। यह सब संसार वासियों के लिये एक शिक्षा के सिवा कुछ नहीं है।

وَإِسْمَاعِيلَ وَالْيَسَعَ وَنُوحًا وَلُوطًا وَكَلْفَلَنَا  
عَلَى الْعَلَمِينَ ⑩

وَمِنْ أَبَابِهِمْ وَدُرْيَتِهِمْ وَأَخْوَانِهِمْ وَاجْبِيَّهِمْ  
وَهَدَى نَهْمَهُمْ إِلَى صَرَاطٍ مُسْتَقِيمٍ ⑪

ذَلِكَ هُدَى اللَّهُ يَهْدِي بِهِ مَنْ يَشَاءُ مِنْ  
عِبَادَهُ وَلَوْ أَشْرَكُوا بِهِ عَبْدَهُمْ مَا كَانُوا  
يَعْمَلُونَ ⑫

أُولَئِكَ الَّذِينَ أَتَيْنَاهُمُ الْكِتَابَ وَالْحُكْمَ  
وَالشُّرُورَةُ فَإِنْ يَكْفُرُوا بِهَا هُوَ لَهُمْ فَقَدْ وَكَلَّا  
بِهَا قَوْمٌ أَلْيَسُوا بِهَا كُفَّارٌ ⑬

أُولَئِكَ الَّذِينَ هَدَى اللَّهُ فِيهِمْ دَارُهُمْ  
أَفْتَدَهُمْ قُلْ لَا أَسْلَكُمُ عَلَيْهِ أَجْرًا إِنْ  
هُوَ إِلَّا ذِكْرٌ لِلْعَلَمِينَ ⑯

1 इन आयतों में 18 नबियों की चर्चा करने के पश्चात् यह कहा है कि यदि यह सब भी मिश्रण करते तो इन के सत्कर्म व्यर्थ हो जाते। जिस से अभिप्राय शिर्क (मिश्रणवाद) की गंभीरता से सावधान करना है।

2 अर्थात् इस्लाम का उपदेश देने पर

91. तथा उन्होंने अल्लाह का सम्मान जैसे करना चाहिये नहीं किया। जब उन्होंने कहा कि अल्लाह ने किसी पुरुष पर कुछ नहीं उतारा, उन से पूछिये कि वह पुस्तक जिसे मूसा लाये, जो लोगों के लिये प्रकाश तथा मार्गदर्शन है, किस ने उतारी है जिसे तुम पन्नों में कर के रखते हो? जिस में से तुम कुछ को लोगों के लिये व्याख्या करते हों और बहुत कुछ छुपा रहे हो। तथा तुम को उस का ज्ञान दिया गया, जिस का तुम को और तुम्हारे पूर्वजों को ज्ञान न था? आप कह दें कि अल्लाह ने। फिर उन्हें उन के विवादों में खेलते हुये छोड़ दें।

92. तथा यह (कुर्�आन) एक पुस्तक है जिसे हम ने (तौरात के समान) उतारा है। जो शुभ, अपने से पूर्व (की पुस्तकों) को सच्च बताने वाली है, तथा ताकि आप «उम्मल कुरा» (मक्का नगर) तथा उस के चतुर्दिक के निवासियों को सचेत<sup>[1]</sup> करों। तथा जो परलोक के प्रति विश्वास रखते हैं वही इस पर ईमान लाते हैं। और वही अपनी नमाजों का पालन करते<sup>[2]</sup> हैं।

93. और उस से बड़ा अत्याचारी कौन होगा जो अल्लाह पर झूठ घड़े और कहे

وَمَا قَدَرُوا اللَّهَ حَقِيقَةً إِذْ قَالُوا مَا أَنْزَلَ اللَّهُ عَلَىٰ بَشَرٍ مِّنْ شَيْءٍ فَلْمَنْ اَنْزَلَ الْكِتَابَ الَّذِي جَاءَ بِهِ مُوسَىٰ نُورًا وَهُدًى لِّلْكَافِرِ بِمَا جَعَلُوهُنَّهُ قَرَاطِيسَ تَبَدَّلُهَا وَخَعْفُونَ كَثِيرًا وَعَلِمُوا مَا لَمْ يَعْلَمُوا إِنَّمَا يُنَزَّلُ لِأَبَاءَكُلِّ أُمَّةٍ فَلَمَّا تَرَهُمْ خَوْفٌ مِّنْ يَوْمِ الْحِسْبَانِ<sup>①</sup>

وَهَذَا كِتَابٌ أَنْزَلْنَاهُ بِرَوْمَصِيقٍ الَّذِي بَيْنَ يَدِيهِ وَلِتُنذِرَ أُمَّةَ الْقُرْبَانِ وَمَنْ حَوْلَهَا وَالَّذِينَ يُؤْمِنُونَ بِالآخِرَةِ يُؤْمِنُونَ بِهِ وَهُمْ عَلَىٰ صَلَاتِهِمْ يَحْفَظُونَ<sup>②</sup>

وَمَنْ أَظْلَمُ مِنْ إِنْفَرْدِي عَلَىٰ الْكُوْكِبِ إِلَّا وَقَالَ

1 अर्थात् पूरे मानव संसार को अल्लाह की अवैज्ञानिक दुष्परिणाम से सावधान करें। इस में यह संकेत है कि आप सलल्लाहु अलैहि व सलल्लम पूरे मानव संसार के पथ प्रदर्शक तथा कुर्�आन सब के लिये मार्गदर्शन है। और आप केवल किसी एक जाति या क्षेत्र अथवा देश के नवी नहीं हैं।

2 अर्थात् नमाज उस के निर्धारित समय पर बराबर पढ़ते हैं।

कि मेरी ओर प्रकाशना (वही) की गई है, जब कि उस की ओर वही (प्रकाशना) नहीं की गयी। तथा जो यह कहे कि अल्लाह ने जो उतारा है उस के समान मैं भी उतार दूँगा? और (हे नबी!) आप यदि ऐसे अत्याचारी को मरण की घोर दशा में देखते जब की फरिश्ते उन की ओर हाथ बढ़ाये (कहते हैं): अपने प्राण निकालो! आज तुम्हें इस कारण अपमानकारी यातना दी जायेगी जो अल्लाह पर झूठ बोलते और उस की आयतों (को मानने) से अभिमान कर रहे थे।

94. तथा (अल्लाह) कहेगा: तुम मेरे सामने उसी प्रकार अकेले आ गये जैसे तुम्हें प्रथम बार हम ने पैदा किया था। तथा हम ने जो कुछ दिया था, अपने पीछे (संसार ही में) छोड़ आये। और आज हम तुम्हारे साथ तुम्हारे अभिस्तावकों (सिफारिशियों) को नहीं देख रहे हैं। जिन के बारे में तुम्हारा भ्रम था कि तुम्हारे कामों में वह (अल्लाह के) साझी हैं। निश्चय तम्हारे बीच के संबंध भंग हो गये हैं, और तुम्हारा सब भ्रम खो गया है।

95. वास्तव में अल्लाह ही अब तथा गुठली को (धरती के भीतर) फाड़ने वाला है। वह निर्जीव से जीवित को निकालता है, तथा जीवित से निर्जीव को निकालने वाला। वही अल्लाह (सत्य पूज्य) है। फिर तुम कहाँ वहके जा रहे हो?

أُوحِيَ إِلَيْهِ رَبُّ الْيَوْمَ شَيْءٌ فَمَنْ قَالَ سَائِرُ  
مِثْلُ مَا أَنْزَلَ اللَّهُ وَلَوْ تَرَى إِذَا الظَّالِمُونَ فِي نَعْمَانَ  
الْمُؤْمِنُونَ وَالْمُهَاجِرُونَ بِإِسْلَامِهِمْ هُمُّ الْأَقْسَطُ  
الْيَوْمَ يُحِزَّونَ عَذَابَ النَّقْنُونَ بِمَا لَنْتُمْ تَعْلَمُونَ عَلَى  
اللَّهِ عَذَابُ الْجِنِّ وَكُلُّهُمْ عَنِ ابْيَهِ شَكِيرُونَ<sup>⑤</sup>

وَلَقَدْ جَعَلْنَا فِرَادِي كَمَا خَلَقْنَاكُمْ أَوْلَى مَرْءَةً  
وَرَبَّكُمْ تَأْخُذُنَاهُ وَلَمْ يُظْهُرُوكُمْ وَمَا تَرَى مَعَكُمْ  
شَفَاعَاءَ كُلُّ الَّذِينَ زَعَمُوا أَنَّهُمْ فِي كُلِّ شَرِّ كُوَفَّاً لَقَدْ  
نَقْطَعَ بَيْنَكُمْ وَضَلَّ عَنْكُمْ مَا كُنْتُمْ  
تَرْغُمُونَ<sup>⑥</sup>

إِنَّ اللَّهَ فِيْنِ الْعَيْنِ وَالْأَوَى يُخْرِجُ الْجَنَّى مِنَ  
الْمَيْتَاتِ وَخُرُوجُ الْمَيْتَاتِ مِنَ الْجَنِّ ذَلِكُ اللَّهُ كَلِيلٌ  
تُؤْفَلُونَ<sup>⑦</sup>

96. वह प्रभात का तड़काने वाला, और उसी ने सुख के लिये रात्रि बनाई तथा सूर्य और चाँद हिसाब के लिये बनाया। यह प्रभावी गुणी का निर्धारित किया हुआ अंकन (माप)<sup>[1]</sup> है।

97. उसी ने तुम्हारे लिये तारे बनाये हैं, ताकि उन की सहायता से थल तथा जल के अंधकारों में रास्ता पाओ। हम ने (अपनी दया के) लक्षणों का उन के लिये विवरण दे दिया है जो लोग ज्ञान रखते हैं।

98. वही है जिस ने तुम्हें एक जीव से पैदा किया। फिर तुम्हारे लिये (संसार में) रहने का स्थान है। और एक समर्पण (मरण) का स्थान है। हम ने उन्हें अपनी आयतों (लक्षणों) का विवरण दे दिया जो समझ बूझ रखते हैं।

99. वही है जिस ने आकाश से जल की वर्षा की, फिर हम ने उस से प्रत्येक प्रकार की उपज निकाल दी। फिर उस से हरियाली निकाल दी। फिर उस से तह पर तह दाने निकालते हैं। तथा खजर के गाभ से गुच्छे झूके हुये। और अंगूरों तथा जैतून और अनार के बाग समरूप तथा स्वाद में अलग-अलग। उस के फल को देखो जब फल लाता है, तथा उस के पकने को। निःसदैह इन में उन लोगों के लिये बड़ी निशानियाँ

فَالْيَقِنُ الْإِصْبَارُ وَجَعَلَ اللَّيلَ سَكَناً وَالشَّمْسَ  
وَالْقَمَرَ حُسْبَانَ لِذلِكَ تَعْبُرُ الْعَيْنَ<sup>①</sup>

وَهُوَ الَّذِي جَعَلَ لِكُلِّ الْجِئْمَ مِلَهَتَهُ وَإِلَيْهَا فِي  
ظُلْمِتِ الْبَرِّ وَالْبَحْرِ مَقْدُصَنَا الْأَيْتَ لِقَوْمٍ  
يَعْلَمُونَ<sup>②</sup>

وَهُوَ الَّذِي أَنْشَأَ كُمْرَنَ نَفْسٍ وَاحِدَةً فَسُتْرَ  
وَمُسْتَوْدِعٌ قَدْ قَضَانَا الْأَيْتَ لِقَوْمٍ يَنْفَهُونَ<sup>③</sup>

وَهُوَ الَّذِي أَنْزَلَ مِنَ السَّمَاءِ مَا شَاءَ فَأَخْرَجَنَا بِهِ  
بَيْتَ كُلِّ شَيْءٍ فَأَخْرَجَنَا مِنْهُ خَفْرًا ثُمَّ جَاءَنَا مِنْهُ  
مَرَاجِلًا وَمِنَ الْعُنْلِ مِنْ طَلِيعَهَا قَنْوَانٌ دَارِيَّةٌ  
وَجَدَثٌ مِنْ أَعْنَابٍ وَالرَّيْشُونَ وَالرُّمَانَ مُشَبِّهٌ  
وَغَيْرَ مُمَشَّلِيَّوْ أَنْظَرُوا إِلَيْنَا نَرَقَةَ أَذَّالَّ  
وَيَنْعِهَ إِنَّ فِي ذَلِكُمْ لَا يَتَعْمَلُونَ<sup>④</sup>

<sup>1</sup> जिस में एक पल की भी कमी अथवा अधिकता नहीं होती।

(लक्षण)<sup>[१]</sup> हैं जो ईमान लाते हैं।

100. और उन्हों ने जिन्हों को अल्लाह का साझी बना दिया। जब कि अल्लाह ही ने उन की उत्पत्ति की है। और बिना ज्ञान के उस के लिये पुत्र तथा पुत्रियाँ गढ़ ली। वह पवित्र तथा उच्च है उन बातों से जो वह लोग कह रहे हैं।

101. वह आकाशों तथा धरती का अविष्कारक है, उस के संतान कहाँ से हो सकती है, जब कि उस की पत्नी ही नहीं है? तथा उसी ने प्रत्येक वस्तु को पैदा किया है। और वह प्रत्येक वस्तु को भली भाँति जानता है।

102. वही अल्लाह तुम्हारा पालनहार है, उस के अतिरिक्त कोई सच्चा पूज्य नहीं। वह प्रत्येक वस्तु का उत्पत्तिकार है। अतः उस की इबादत (वंदना) करो। तथा वही प्रत्येक चीज़ का अभिरक्षक है।

103. उस का आँख इद्राक नहीं कर सकती,<sup>[२]</sup> जब कि वह सब कुछ देख रहा है। वह अत्यंत सूक्ष्मदर्शी और सब चीजों से अवगत है।

1 अर्थात् अल्लाह के पालनहार होने की निशानियाँ।

आयत का भावार्थ यह है कि जब अल्लाह ने तुम्हारे आर्थिक जीवन के साधन बनाये हैं तो फिर तुम्हारे आत्मिक जीवन के सुधार के लिये भी प्रकाशना और पुस्तक द्वारा तुम्हारे मार्गदर्शन की व्यवस्था की है तो तुम्हें उस पर आश्चर्य क्यों है, तथा इसे अस्वीकार क्यों करते हो?

2 अर्थात् इस संसार में उसे कोई नहीं देख सकता।

وَجَعَلُوا لِلّهِ شَرِيكَ الْجِنَّةِ وَخَلَقَهُمْ وَحْرَفُوا لَهُ  
بَيْنَ أَيْدِيهِنَّ وَبَدَتْ إِيمَانُهُ عَلَىٰ سُجْنَةِ وَتَعَلَّمَ عَلَيْهِ صَفْوَنَ

بِدِينِ السَّمَاوَاتِ وَالْأَرْضِ أَنِّي يَكُونُ لَهُ وَلِيٌّ  
وَلَمْ يَكُنْ لَهُ صَاحِبَةٌ وَخَلَقَ كُلَّ شَيْءٍ وَهُوَ  
بِكُلِّ شَيْءٍ عَلَيْهِ

ذَلِكُمُ اللَّهُ رَبُّكُمْ لَا إِلَهَ إِلَّا هُوَ خَالِقُ كُلِّ شَيْءٍ  
فَاعْبُدُوهُ وَمَوْلَوْهُ عَلَىٰ كُلِّ شَيْءٍ وَكُلُّ شَيْءٍ

لَا تَنْدِرُكُمُ الْأَبْصَارُ وَهُوَ يُدْرِكُ الْأَبْصَارَ  
وَهُوَ الظَّفِيرُ الْعَلِيُّ

104. तुम्हारे पास निशानियाँ आ चुकी हैं। तो जिस ने समझ बझ से काम लिया उस का लाभ उसी के लिये है। और जो अन्धा हो गया तो उस की हानि उसी पर है। और मैं तुम पर संरक्षक<sup>[1]</sup> नहीं हूँ।
105. और इसी प्रकार हम अनेक शैलियों में आयतों का वर्णन कर रहे हैं। और ताकि वह (काफिर) कहें कि आप ने पढ़<sup>[2]</sup> लिया है। और ताकि हम उन लोगों के लिये (तर्कों को) उजागर कर दें जो ज्ञान रखते हैं।
106. आप उस पर चलें जो आप पर आप के पालनहार की ओर से वहयी (प्रकाशना) की जा रही है। उस के सिवा कोई सत्य पृज्य नहीं है। और मुशर्रिकों की बातों पर ध्यान न दें।
107. और यदि अल्लाह चाहता तो वह लोग साझी न बनाते। और हम ने आप को उन पर निरीक्षक नहीं बनाया है। तथा न आप उन पर<sup>[3]</sup> अभिकारी हैं।
108. और (हे ईमान वालो!) उन्हें बुरा न कहो जिन (मूर्तियों) को वह अल्लाह के सिवा पुकारते हैं। अन्यथा वह लोग अज्ञानता के कारण अति

قَدْ جَاءَكُمْ بِصَادِرٍ مِّنْ رَّيْتُكُمْ فَمَنْ أَبْصَرَ  
فَلِنَفْسِهِ وَمَنْ غَيْرِهِ فَعَلَيْهِمَا وَمَا أَنَا عَلَيْكُمْ  
بِعَنْفِيظٍ

وَكَذَلِكَ تُصَرِّفُ الْآيَاتِ وَلَيَقُولُوا دَرَسْتَ  
وَلِيُنَبِّئَنَّهُ لِلَّوْمِ يَعْلَمُونَ

إِنَّمَا أَنْجَى إِلَيْكَ مِنْ رَّيْتَكَ لِأَنَّ اللَّهَ إِلَهُ  
وَأَعْرِضْ عَنِ الْمُشْرِكِينَ

وَلَوْشَاءَ اللَّهُ مَا أَشْرَكُوكُمْ وَمَا جَعَلْنَاكُمْ  
عَلَيْهِمْ حَقِيقًا وَمَا أَنْتُ عَلَيْهِمْ بِوَكِيلٍ

وَلَا أَنْبُوَ الَّذِينَ يَذْهَبُونَ مِنْ دُرْنِ اللَّهِ قَسْبُوكُمْ  
اللَّهُ عَدُوُّ إِنْ يَعْلُمُ عِلْمًا كَذَلِكَ زَيَّنَاهُ الْكُلُّ أَمْمَةً  
عَمَلَهُمْ بِهِ إِلَى رَيْهُمْ مَرْجِعُهُمْ فِيَنْتَهُمْ بِمَا

1 अर्थात् नबी (सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम) सत्धर्म के प्रचारक हैं।

2 अर्थात् काफिर यह कहें कि आप ने यह अहले किताब से सीख लिया है और इसे अस्वीकार कर दो। (इब्ने कसीर)

3 आयत का भावार्थ यह है कि नबी का यह कर्तव्य नहीं कि वह सब को सीधी राह दिखा दे। उस का कर्तव्य केवल अल्लाह का संदेश पहुँचा देना है।

कर के अल्लाह को बुरा कहेंगे। इसी प्रकार हम ने प्रत्येक समुदाय के लिये उन के कर्म को सुशोभित बना दिया है। फिर उन के पालनहार की ओर ही उन्हें जाना है। तो उन्हें बता देगा जो वे करते रहे।

كَلُّوَيَعْمَلُونَ

109. और उन (मुशिरकों) ने बल पूर्वक शपथें ली कि यदि हमारे पास कोई आयत (निशानी) आ जाये तो उस पर वह अवश्य ईमान लायेंगे। आप कह दें: आयतें (निशानियाँ) तो अल्लाह ही के पास हैं। और (हे ईमान वालो!) तुम्हें क्या पता कि वह निशानियाँ जब आ जायेंगी तो वह ईमान<sup>[1]</sup> नहीं लायेंगे।

وَقَسَمُوا بِاللَّهِ جَهَدًا إِيمَانَهُ لَئِنْ جَاءَتْ تَهْرِيَةٌ  
لِّيُؤْمِنُنَّ بِهَا قُلْ إِنَّمَا الْأَيْمَانُ عِنْدَ اللَّهِ وَمَا  
يُشَعِّرُكُمْ أَنَّهَا إِذَا جَاءَتْ لَا يُؤْمِنُونَ

110. और हम उन के दिलों और आँखों को ऐसे ही फेर<sup>[2]</sup> देंगे जैसे वह पहली बार इस (कुर्�आन) पर ईमान नहीं लाये। और हम उन्हें उन के

وَنَقِلُّبُ أَفْيَدَ تَهْرِيَةً وَأَبْصَارُهُمْ كَمَا لَهُمُ مِنْ  
بِهِ أَوْلَ مَرَّةٍ وَنَذِرُهُمْ فِي طُغْيَانِهِمْ  
يَعْمَهُونَ

1 मक्का के मुशरिकों ने नबी सल्लल्लाहू अलैहि व सल्लम से कहा कि यदि सफा (पर्वत) सौने का हो जाये तो वह ईमान लायेंगे। कुछ मुसलमानों ने भी सोचा कि यदि ऐसा हो जाये तो संभव है कि वह ईमान ले आये। इसी पर यह आयत उतरी। (इन्हे कसीर)

2 अर्थात् कोई चमत्कार आ जाने के पश्चात् भी ईमान नहीं लायेंगे, क्यों कि अल्लाह, जिसे सुपथ दर्शाना चाहता है, वह सत्य को सुनते ही उसे स्वीकार कर लेता है। किन्तु जिस ने सत्य के विरोध ही को अपना आचरण-स्वभाव बना लिया हो तो वह चमत्कार देख कर भी कोई बहाना बना लेता है। और ईमान नहीं लाता। जैसे इस से पहले नवियों के साथ हो चुका है। और स्वयं नबी सल्लल्लाहू अलैहि व سल्लम ने बहुत सी निशानियाँ दिखाई फिर भी ये मुशरिक ईमान नहीं लाये। जैसे आप ने मक्का वासियों की माँग पर चाँद के दो भाग कर दिये। जिन दोनों के बीच लोगों ने हिरा (पर्वत) को देखा। (परन्तु वे फिर भी ईमान नहीं लाये।) (सहीह बुखारी- 3637, मुस्लिम- 2802)

कुकर्म में बहकते छोड़ देंगे।

111. और यदि हम इन की ओर (आकाश से) फरिश्ते उतार देते और इन से मुर्दं बात करते और इन के समक्ष प्रत्येक वस्तु एकत्र कर देते, तब भी यह ईमान नहीं लाते परन्तु जिसे अल्लाह (मार्गदर्शन देना) चाहता। और इन में से अधिकृतर (तथ्य से) अज्ञान हैं।
112. और (हे नबी!) इसी प्रकार हम ने मनुष्यों तथा जिव्हों में से प्रत्येक नबी का शत्रु बना दिया जो धोका देने के लिये एक दूसरे को शोभनीय बात सुझाते रहते हैं। और यदि आप का पालनहार चाहता तो ऐसा नहीं करते। तो आप उन्हें छोड़ दें, और उन की घड़ी हुई बातों को।
113. (वह ऐसा इस लिये करते हैं) ताकि उस की ओर उन लोगों के दिल झुक जायें जो परलोक पर विश्वास नहीं रखते। और ताकि वह उस से प्रसन्न हो जायें और ताकि वह भी वही कुकर्म करने लगें जो कुकर्म वह लोग कर रहे हैं।
114. (हे नबी!) उन से कहो कि क्या मैं अल्लाह के सिवा किसी दूसरे न्यायकारी की खोज करूँ, जब कि उसी ने तुम्हारी ओर यह खुली पुस्तक (कुर्�आन) उतारी<sup>[1]</sup> है। तथा जिन को हम नै पुस्तक<sup>[2]</sup> प्रदान की है वह जानते हैं

1 अर्थात् इस में निर्णय के नियमों का विवरण है।

2 अर्थात् जब नबी (सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम) पर जिब्रील प्रथम वहयी लाये और

وَلَوْا نَنْزَلْنَا إِلَيْهِمُ الْمَلِكَةَ وَكَلْمَمُ  
الْمَوْتَىٰ وَحَسْرَنَا عَلَيْهِمْ كُلَّ شَيْءٍ فَبِلَامَا كَانُوا  
لِيُؤْمِنُوا لَا إِنْ يَسْأَمَ اللَّهُ وَلَكِنَ الْكَرْكَمُ  
يَجْهَمُونَ<sup>①</sup>

وَكَذِلِكَ جَعَلْنَا لِكُلِّ بَيْتٍ عَدُوًّا شَيْطَانَ  
الْإِنْسَنُ وَالْجِنُّ يُوْجِنُ بَعْضُهُمْ إِلَى بَعْضٍ  
رُخْرُقُ الْقَوْلِ غَرْوَلًا وَلَوْسَارَ بَيْكَ مَا فَاعْلَمُ  
فَذَرُهُمْ وَمَا يَفْتَرُونَ<sup>②</sup>

وَلَتَصْنَعُ لِيْهُ أَفْدَدَهُ الَّذِينَ لَا يُؤْمِنُونَ  
بِالآخِرَةِ وَلِيَرْضُوْهُ وَلِيَقْتَرُ فَوْمَاهُمْ  
مُّقْتَرُفُونَ<sup>③</sup>

أَفَغَيْرَ اللَّهِ أَنْ يُقْرِئَ حَكْمًا وَهُوَ الَّذِي أَنْزَلَ  
لِيَكُمُ الْكِتَابَ مُفَصَّلًا وَالَّذِينَ اتَّيْنَاهُمُ الْكِتَابَ  
يَعْلَمُونَ أَنَّهُ مُنْزَلٌ مِّنْ رَّبِّكَ بِالْحَقِّ فَلَا  
يَكُونُنَّ مِنَ الْمُمْتَرِينَ<sup>④</sup>

कि यह (कुर्झान) आप के पालनहार की ओर से सत्य के साथ उतारा है। अतः आप सदेह करने वालों में न हों।

115. आप के पालनहार की बात सत्य तथा न्याय की है, कोई उस की बात (नियम) बदल नहीं सकता और वह सब कुछ सुनने जानने वाला है।
116. और (हे नबी!) यदि आप संसार के अधिकृतर लोगों की बात मानेंगे तो वह आप को अल्लाह के मार्ग से बहका देंगे। वह केवल अनुमान पर चलत<sup>[1]</sup> है, और आँकलन करते हैं।
117. वास्तव में आप का पालनहार ही अधिक जानता है कि कौन उस की राह से बहकता है। तथा वही उन्हें भी जानता है जो सुपथ पर हैं।
118. तो उन पशुओं में से जिस पर बध करते समय अल्लाह का नाम लिया गया हो खाओ,<sup>[2]</sup> यदि तुम उस

وَتَقَتُّ كَلِمَاتُ رَبِّكَ صَدِيقٌ وَعَذَابًا لِّا مُبَيِّنٍ  
لِّكَلِمَتِهِ وَهُوَ السَّمِيعُ الْعَلِيمُ<sup>①</sup>

وَإِنْ تُطِعْ إِكْرَارَ مَنْ فِي الْأَرْضِ يُضْلُلُ إِلَيْهِ  
سَيِّئِ الْحَمْدُ لِلَّهِ رَبِّ الْعَالَمِينَ وَإِنْ هُوَ  
إِلَّا بِحَرْبٍ صُونَ<sup>②</sup>

إِنَّ رَبَّكَ هُوَ أَعْلَمُ مَنْ يَقْصِدُ عَنْ سَيِّئِهِ وَهُوَ  
أَعْلَمُ بِالْمُهْتَدِينَ<sup>③</sup>

فَكُلُّوا مِمَّا ذُكِرَ أَسْمُوْ اللَّهُ عَلَيْهِ إِنْ كُنْتُمْ بِإِيمَانٍ  
مُّؤْمِنِينَ<sup>④</sup>

आप ने मक्का के ईसाई विद्वान वर्का बिन नौफ़ल को बताया तो उस ने कहा कि यह वही फ़रिशता है जिसे अल्लाह ने मुसा (अलैहिस्सलाम) पर उतारा था। (बुखारी -3, मुस्लिम-160) इसी प्रकार मदीना के यहूदी विद्वान अब्दुल्लाह बिन सलाम ने भी नबी (सलाल्लाहु अलैहि व सल्लम) को माना और इस्लाम लाये।

1 आयत का भावार्थ यह है कि सत्योसत्य का निर्णय उस के अनुयायियों की संख्या से नहीं। सत्य के मूल नियमों से ही किया जा सकता है। आप (सलाल्लाहु अलैहि व सल्लम) ने कहा: मेरी उम्मत के 72 सम्प्रदाय नरक में जायेंगे। और एक स्वर्ग में जायेगा। और वह, वह होगा जो मेरे और मेरे साथियों के पथ पर होगा। (तिर्मिज़ी- 263)

2 इस का अर्थ यह है कि बध करते समय जिस जानवर पर अल्लाह का नाम न लिया गया हो, बल्कि देवी-देवता तथा पीर-फ़कीर के नाम पर बलि दिया गया

की आयतों (आदेशों) पर ईमान  
(विश्वास) रखते हो।

119. और तुम्हारे उस में से न खाने का क्या कारण है जिस पर अल्लाह का नाम लिया गया<sup>[1]</sup> हो, जब कि उस ने तुम्हारे लिये स्पष्ट कर दिया है जिसे तुम पर हराम (अवैध) किया है। परन्तु जिस (वर्जित) के (खाने के लिये) विवश कर दिये जाओ<sup>[2]</sup>, और वास्तव में बहुत से लोग अपनी मनमानी के लिये लोगों को अपनी अज्ञानता के कारण बहकाते हैं। निश्चय आप का पालनहार उल्लंघनकारियों को भली भाँति जानता है।

120. (हे लोगो!) खुले तथा छुपे पाप छोड़ दो। जो लोग पाप कमाते हैं वे अपने कुकर्मा का प्रतिकार (बदला) दिये जायेंगे।

121. तथा उस में से न खाओ जिस पर अल्लाह का नाम न लिया गया हो। वास्तव में उसे खाना (अल्लाह की) अवैज्ञा है। निःदेह शैतान अपने सहायकों के मनों में संशय डालते रहते हैं, ताकि वह तुम से विवाद

हो तो वह तुम्हारे लिये वर्जित है। (इब्ने कसीर)

- 1 अर्थात् उन पशुओं को खाने में कोई हरज नहीं जो मुसलमानों की दुकानों पर मिलते हैं क्यों कि कोई मुसलमान अल्लाह का नाम लिये बिना बध नहीं करता। और यदि शंका हो तो खाते समय ((बिस्मिल्लाह)) कह ले। जैसा कि हदीस शरीफ में आया है। (देखिये: बुखारी- 5507)
- 2 अर्थात् उस वर्जित को प्राण रक्षा के लिये खाना उचित है।

وَمَا لِلَّهِ أَكْلُوا مِمَّا دُكِّرَ أَسْحَابُ اللَّهِ عَلَيْهِ وَقَدْ  
فَصَلَ لِكُمْ مَا حَرَمَ اللَّهُ إِلَيْكُمْ إِلَّا مَا أَضْطَرَ رُبُّ  
الْإِيمَانِ وَإِنَّ كَثِيرًا مِّنَ الْمُفْسِدُونَ يَا هُوَ أَبْعَدُ  
عِلْمًا إِنَّ رَبَّكَ هُوَ أَعْلَمُ بِالْعِتَدِينَ ⑥

وَذَرُوا أَطْاهِرَ الْأَنْوَافَ وَبَاطِنَهُ لِرَبِّ الْأَنْوَافِ  
يَكُسُّونَ الْأَنْوَافَ سِيَّرُونَ بِسَاكِنَاتِ الْأَنْوَافِ ⑦

وَلَا تَكُونُوا مِنَ الظَّالِمِينَ كَرِاسُ اللَّهِ عَلَيْهِ وَلَئِنْ  
لَّفْسِقٌ وَإِنَّ الشَّيْطَانَ لَيُؤْخُذُونَ إِلَى أَوْلَادِهِمْ  
لِيُجَاهَدُوْكُمْ وَإِنَّ أَطْعَتُهُمْ إِنَّمَا لَكُمُ الْشَّرِكُونَ ⑧

करों<sup>[१]</sup> और यदि तुम ने उन की बात मान ली तो निश्चय तुम मुशर्रिक हो।

122. तो क्या जो निर्जीव रहा हो फिर हम ने उसे जीवन प्रदान किया हो तथा उस के लिये प्रकाश बना दिया हो जिस के उजाले में वह लोगों के बीच चल रहा हो, उस जैसा हो सकता है जो अंधेरों में हो उस से निकल न रहा हो?<sup>[२]</sup> इसी प्रकार काफिरों के लिये उन के कुर्कर्म सुन्दर बना दिये गये हैं।
123. और इसी प्रकार हम ने प्रत्येक बस्ती में उस के बड़े अपराधियों को लगा दिया ताकि उस में षड्यंत्र रचें। तथा वह अपने ही विरुद्ध षट्यंत्र रचते<sup>[३]</sup> हैं परन्तु समझते नहीं हैं।
124. और जब उन के पास कोई निशानी आती है तो कहते हैं कि हम उसे कदापि नहीं मानेंगे, जब तक उसी के समान हमें भी प्रदान न किया जाये जो अल्लाह के रसूलों को प्रदान किया गया है। अल्लाह ही अधिक जानता है कि अपना

أَوْمَنْ كَانَ مَيْتًا فَأَحْيَيْنَاهُ وَجَعَلْنَا لَهُ نُورًا  
يَئِشُّ بِهِ فِي النَّاسِ كَمَنْ مَيْتَهُ فِي الظُّلْمَةِ  
لَمْ يَسْعِ بِهِ حَاجَةً مَنْهَا كَذَلِكَ رُؤْبَنَ الْكُفَّارُ مَا  
كَانُوا يَعْمَلُونَ ﴿٦﴾

وَكَذَلِكَ جَعَلْنَا فِي كُلِّ قَرْبَةٍ أَكْلِمَرْ مُخْبِرِيهِنَا  
لِيمَكِّرُوا فِيهَا وَمَا يَمْكُرُونَ إِلَّا بِأَنْقَصِهِنَّ  
وَمَا يَشْعُرُونَ ﴿٧﴾

وَإِذَا جَاءَهُمْ أَيَّهُ قَالُوا إِنَّا ثُوفِينَ حَتَّىٰ نُوتَّيْ  
وَمِثْلَ مَا أَنْوَتَنَا رَسُولُ اللَّهِ أَعْلَمُ بِهِ حَيْثُ يَعْجَلُ  
بِرَسَالَتِهِ تَبَيِّنِيْبُ الَّذِينَ أَجْرَمُوا أَصْغَارُ عِنْدَ  
اللَّهِ وَعَدَ أَبْشِرِيْدُ إِنَّمَا كَانُوا يَمْكُرُونَ ﴿٨﴾

1 अर्थात् यह कहें कि जिसे अल्लाह ने मारा हो, उसे नहीं खाते। और जिसे तुम ने बध किया हो उसे खाते हो? (इन्हे कसीर)

2 इस आयत में ईमान की उपमा जीवन से तथा ज्ञान की प्रकाश से, और अविश्वास की मरण तथा अज्ञानता की उपमा अँधकारों से दी गयी है।

3 भावार्थ यह है कि जब किसी नगर में कोई सत्य का प्रचारक खड़ा होता है तो वहाँ के प्रमुखों को यह भय होता है कि हमारा अधिकार समाप्त हो जायेगा। इस लिये वह सत्य के विरोधी बन जाते हैं। और उस के विरुद्ध षट्यंत्र रचने लगते हैं। मक्का के प्रमुखों ने भी यही नीति अपना रखी थी।

संदेश पहुँचाने का काम किस से ले। जो अपराधी हैं शीघ्र ही अल्लाह के पास उन्हें अपमान तथा कड़ी यातना उस षडयंत्र के बदले मिलेगी जो वे कर रहे हैं।

125. तो जिसे अल्लाह मार्ग दिखाना चाहता है, उस का सीना (वक्ष) इस्लाम के लिये खोल देता है और जिसे कुपथ करना चाहता है उस का सीना संकीर्ण (तंग) कर देता है। जैसे वह बड़ी कठिनाई से आकाश पर चढ़ रहा<sup>[1]</sup> हो। इसी प्रकार अल्लाह उन पर यातना भेज देता है जो ईमान नहीं लाते।
126. और यही (इस्लाम) आप के पालनहार की सीधी राह है। हम ने उन लोगों के लिये आयतों को खोल दिया है जो शिक्षा ग्रहण करते हों।
127. उन्हीं के लिये आप के पालनहार के पास शान्ति का घर (स्वर्ग) है। और वही उन के सुकर्मा के कारण उन का सहायक होगा।
128. तथा (हे नबी!) याद करो जब वह सब को एकत्र कर के (कहेगा): हे जिन्हों के गिरोह! तुम ने बहुत से मनुष्यों को कुपथ कर दिया और मानव में से उन के मित्र कहेंगे कि

فَمَنْ يُرِدُ اللَّهُ أَنْ يُهْبِيَ يَسْرُحُ صَدَرَةً  
لِلْإِسْلَامِ وَمَنْ يُرِدُ أَنْ يُفْسِدَ يَجْعَلُ صَدَرَةً  
صَيْقَانَ حَرَجًا كَائِنًا يَضَعُدُ فِي السَّمَاءِ بِكَذَلِكَ  
يَجْعَلُ اللَّهُ الرَّحْمَنُ عَلَى الَّذِينَ لَا يُؤْمِنُونَ @

وَهَذَا صَرَاطُ رَبِّكَ مُسَيَّقِيْمَا قَدْ فَصَلَّمَا  
الْآيَتُ لِغَوْمَرِيَّدِ كَرْوَنَ @

لَهُمْ دُرُّ الْسَّلَمُ عِنْدَ رَبِّهِمْ وَهُوَ لِلْمُهْرِبِيَا  
كَانُوا يَعْمَلُونَ @

وَيَوْمَ يَخْشِرُهُمْ جَمِيعًا يَمْسَرُ الْجِنُّ قَدْ  
اسْتَلْكَلَرُهُمْ مِنَ الْأَيْسِ وَقَالَ أَفَلَا يَتَّهِمُ مِنَ  
الْأَيْسِ رَبَّنَا اسْتَمْعِ بَعْضًا بَعْضًا وَبَلَغَنَا أَجَلَنَا  
الَّذِي أَجَلْتَ لَنَا قَلَ الْمَأْمُونُ كُمْ

1 अर्थात् उसे इस्लाम का मार्ग एक कठिन चढ़ाई लगता है जिस के विचार ही से उस का सीना तंग हो जाता है और श्वास रोध होने लगता है।

हे हमारे पालनहार! हम एक दूसरे से लाभांवित होते रहे,<sup>[1]</sup> और वह समय आ पहुँचा जो तू ने हमारे लिये निर्धारित किया था। (अल्लाह) कहेगा: तुम सब का आवास नरक है जिस में सदावासी रहोगे। परन्तु जिसे अल्लाह (बचाना) चाहे। वास्तव में आप का पालनहार गुणी सर्व ज्ञानी है।

129. और इसी प्रकार हम अत्याचारियों को उन के कुकर्मा के कारण एक दूसरे का सहायक बना देते हैं।
130. (तथा कहेगा:) हे जिब्रों तथा मनुष्यों के (मुशर्रिक) समुदाय! क्या तुम्हारे पास तुम्हीं में से रसूल नहीं आये<sup>[2]</sup>, जो तुम्हें हमारी आयतें सुनाते और तुम्हें तुम्हारे इस दिन (के आने) से सावधान करते? वह कहेंगे: हम स्वयं अपने ही विरुद्ध गवाह हैं। तथा उन्हें संसारिक जीवन ने धोखे में रखा था और अपने ही विरुद्ध गवाह हो गये

خَلِيلُنَّ فِيهَا لَا مَا شَاءَ اللَّهُ إِنَّ رَبَّكَ حَكِيمٌ  
عَلَيْهِمْ<sup>[3]</sup>

وَكَذَلِكَ نُؤْتِنَ بَعْضَ الظَّالِمِينَ بَعْضًا لَّهُمَا  
كَانُوا يَكْسِبُونَ<sup>[4]</sup>

يَمْعَثِرُ الرُّجُونَ وَالإِلَيْشُ اللَّهُ يَأْتِكُمُ رُسُلٌ  
مِّنْكُمْ يَقْصُدُونَ عَلَيْكُمُ الْبَيِّنَاتِ  
وَيَنذِرُونَكُمْ لِقَاءَ يَوْمَ حُكْمٍ هُنَّا مُقْلِلُونَ  
شَهِدُنَا عَلَى أَنفُسِنَا وَغَرَّنَا بِالْحَيَاةِ  
الَّذِيْنَ أَوْشَهَدُوا عَلَى أَنفُسِهِمْ أَهْمَّ كَانُوا  
كُفَّارِيْنَ<sup>[5]</sup>

1 इस का भावार्थ यह है कि जिब्रों ने लोगों को संशय और धोखे में रख कर कुपथ किया, और लोगों ने उन्हें अल्लाह का साझी बनाया और उन के नाम पर बलि देते और चढ़ावे चढ़ाते रहे और ओझाई तथा जादू तंत्र द्वारा लोगों को धोखा दे कर अपना उल्लू सीधा करते रहे।

2 कुर्�আn की अनेक आयतों से यह विद्धित होता है कि नबी (सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम) जिब्रों के भी नबी थे जैसा कि सूरह जिब्र आयत 1, 2 में उन के कुर्�আn सुनने और ईमान लाने का वर्णन है। ऐसे ही सूरह अहकाफ में है कि जिब्रों ने कहा: हम ने ऐसी पुस्तक सुनी जो मूसा के पश्चात उतरी है। इसी प्रकार वह सुलैमान के आधीन थे। परन्तु कुर्�আn और हदीस से जिब्रों में नबी होने का कोई संकेत नहीं मिलता। एक विचार यह भी है कि जिब्र आदम (अलैहिस्सलाम) से पहले के हैं इसलिये हो सकता है पहले उन में भी नबी आये हों।

कि वास्तव में वही काफिर थे।

131. (हे नबी!) यह (नवियों को भेजना) इस लिये हुआ कि आप का पालनहार ऐसा नहीं है कि अत्याचार से बस्तियों का विनाश कर दे,<sup>[१]</sup> जब कि उस के निवासी (सत्य से) अचेत रहे हों।
132. प्रत्येक के लिये उस के कर्मानुसार पद हैं। और आप का पालनहार लोगों के कर्म से अचेत नहीं है।
133. तथा आप का पालनहार निस्यह दयाशील है। वह चाहे तो तुम्हें ले जाये और तुम्हारे स्थान पर दूसरों को ले आये। जैसे तुम लोगों को दूसरे लोगों की संतति से पैदा किया है।
134. तुम्हें जिस (प्रलय) का वचन दिया जा रहा है उसे अवश्य आना है। और तुम (अल्लाह को) विवश नहीं कर सकते।
135. आप कह दें: हे मेरी जाति के लोगो! (यदि तुम नहीं मानते) तो अपनी दशा पर कर्म करते रहो। मैं भी कर्म कर रहा हूँ। शीघ्र ही तुम्हें यह ज्ञान हो जायेगा कि किस का अन्त (परिणाम)<sup>[२]</sup> अच्छा है। निःसंदेह

ذَلِكَ أَنْ لَهُ يَكُنْ زَبْدُكَ مُهْلِكَ الْقُرَىٰ بِطُلْمٍ  
وَأَفْلَهَا غَفْلُونَ ①

وَلِكُلِّ دَرَجَتٍ مِّنْ أَعْبَلُوا وَمَارَبَكَ  
بِغَافِلٍ عَمَّا يَعْمَلُونَ ②

وَرَبُّكَ الْعَنْىٰ ذُو الرَّحْمَةِ إِنْ يَشَاءْ يُنْهِكُمْ  
وَيَسْتَخْلِفُ مِنْ بَعْدِ كُمْ مَا يَشَاءْ كَمَا أَنْشَأَ كُمْ  
مِّنْ ذُرَيْةٍ قَوْمٌ أَخْرَيْنَ ③

إِنْ مَا تُؤْعِدُونَ لَا يُؤْتَ إِنْ مَا أَنْتُمْ  
بِمُعْجِزِينَ ④

قُلْ يَقُولُ مَا عَمَلُوا عَلَىٰ مَكَانِكُمْ إِنْ عَاملُ  
قَسْوَتْ تَعْلَمُونَ مَنْ تَكُونُ لَهُ عَاقِبَةُ الدَّارِ  
إِنَّهُ لَا يُفْلِحُ الظَّالِمُونَ ⑤

1 अर्थात् संसार की कोई बस्ती ऐसी नहीं है जिस में संमार्ग दर्शने के लिये नबी न आये हों। अल्लाह का यह नियम नहीं है कि किसी जाति को वही द्वारा मार्गदर्शन से बंचित रखे और फिर उस का नाश कर दे। यह अल्लाह के न्याय के बिल्कुल प्रतिकूल है।

2 इस आयत में काफिरों को सचेत किया गया है कि यदि सत्य को नहीं मानते तो

अत्याचारी सफल नहीं होंगे।

136. तथा उन लोगों ने उस खेती और पशुओं में जिन्हें अल्लाह ने पैदा किया है। उस का एक भाग निश्चित कर दिया, फिर अपने विचार से कहते हैं: यह अल्लाह का है और यह उन (देवताओं) का है जिन को उन्होंने (अल्लाह का) साझी बनाया है। फिर जो उन के बनाये हुये साझियों का है वह तो अल्लाह को नहीं पहुँचता परन्तु जो अल्लाह का है वह उन के साझियों<sup>[1]</sup> को पहुँचता है। वह क्या ही बुरा निर्णय करते हैं!

137. और इसी प्रकार बहुत से मुशरिकों के लिये अपनी संतान के बध करने को उन के बनाये हुये साझियों ने सुशोभित बना दिया है, ताकि उन का विनाश कर दें। और ताकि उन के धर्म को उन पर संदिग्ध कर दें। और यदि अल्लाह चाहता तो वह यह (कुकर्म) नहीं करते। अतः आप उन्हें छोड़<sup>[2]</sup> दें तथा उन की बनाई हुई बातों को।

138. तथा वे कहते हैं कि यह पशु और

जो कर रहे हो वही करो तुम्हें जल्द ही इस के परिणाम का पता चल जायेगा।

1 इस आयत में अरब के मुशरिकों की कुछ धार्मिक परम्पराओं का खण्डन किया गया है कि सब कुछ तो अल्लाह पैदा करता है और यह उस में से अपने देवताओं का भाग बनाते हैं। फिर अल्लाह का जो भाग है उसे देवताओं को दे देते हैं। परन्तु देवताओं के भाग में से अल्लाह के लिये व्यय करने को तैयार नहीं होते।

2 अरब के कुछ मुशरिक अपनी पुत्रियों को जन्म लेते ही जीवित गाड़ दिया करते थे।

وَجَعَلُوا لِهِ مَسَادِرَ أَمِنَ الْحَرْثِ  
وَالْأَنْعَامَ تَصِيبُهَا فَقَاتَ الْوَاهِدَةُ لِهِ  
بِرْعُبِهِمْ وَمَدَ الشَّرَكَ لِهِمْ كَمَا كَانَ  
إِشْرَكَ كَمَا يَبْهُمْ فَلَا يَصِلُ إِلَى اللَّهِ وَمَا كَانَ  
بِلَهُ فَهُوَ يَصِلُ إِلَى شُرَكَ كَمَا يَبْهُمْ سَاءَ مَا  
يَحْكُمُونَ ۝

وَكَذَلِكَ زَيَّنَ لِكَثِيرٍ مِّنَ الْمُشْرِكِينَ  
مُتَلَّ أَوْلَادِهِمْ شُرَكَ كَمَا يَبْهُمْ  
وَلَيَلِمُسُوا عَلَيْهِمْ دِينَهُمْ وَلَوْ شَاءَ اللَّهُ  
مَا فَعَلُوهُ فَذُرُّهُمْ وَمَا يَفْتَرُونَ ۝

وَقَاتَ الْوَاهِدَةُ أَنْعَامَ وَحْرَثٍ حِجْرًا

खेत वर्जित है, इसे वही खा सकता है, जिसे हम अपने विचार से खिलाना चाहें। फिर कुछ पशु हैं, जिन की पीठ हराम<sup>[1]</sup> (वर्जित) है, और कुछ पशु हैं, जिन पर (बध करते समय) अल्लाह का नाम नहीं लेते, अल्लाह पर आरोप लगाने के कारण, अल्लाह उन्हें उन के आरोप लगाने का बदला अवश्य देगा।

139. तथा उन्हों ने कहा कि जो इस पशुओं के गर्भ में है वह हमारे पुरुषों के लिये विशेष है, और हमारी पत्नियों के लिये वर्जित है। और यदि मुर्दा हो तो सभी उस में साझी हो सकते<sup>[2]</sup> हैं। अल्लाह उन के विशेष करने का कुफल उन्हें अवश्य देगा, वास्तव में वह तत्वज्ञ अति ज्ञानी है।
140. वास्तव में वह क्षति में पड़ गये जिन्हों ने मुर्खता से किसी ज्ञान के बिना अपनी संतान को बध किया और उस जीविका को जो अल्लाह ने उन्हें प्रदान कि अल्लाह पर आरोप लगा कर, अवैध बना लिया, वह बहक गये और सीधी राह पर नहीं आ सके।

يَطْعَمُهَا الْأَمَنُ نَشَاءُ بِرَغْبَتِهِمْ وَأَنْعَامٌ  
حُرْمَتْ طَهُورُهَا وَأَنْعَامٌ لَرِيَّدُ كُرُونَ  
إِسْمَاعِيلُ عَلَيْهَا أَفْتَرَأَ عَلَيْهِ سَيْجِرٌ يُهُمْ بِهَا  
كَانُوا يَقْرَرُونَ ⑤

وَقَالَ لَوْا مَارِقٌ بَطْلُونٌ فِي ذِي الْأَكْعَادِ خَالِصَةٌ  
لِذُكْرِنَا وَمُحَرَّمٌ عَلَى أَزْوَاجِنَا وَلَنْ يَكُنْ  
مَيْتَةٌ فَهُمْ فِيهِ شُرَكٌ لِسَيْجِرٍ يُهُمْ وَضَنْفُهُمْ  
إِلَهٌ حَكِيمٌ عَلَيْهِ ⑥

فَدُخَسَرَ الَّذِينَ قَاتَلُوا أَوْلَادَهُمْ سَفَهًا  
يُعَذَّرُ عَلَيْهِمْ وَحَرَمُوا مَارِقَ قَهْمَهُ اللَّهُ أَفْتَرَأَ  
عَلَى اللَّهِ قَدْ ضَلُّوا وَمَا كَانُوا مُهْتَدِينَ ⑦

1 अर्थात् उन पर सवारी करना तथा बोझ लादना अवैध है। (देखिये: सूरह माइदा-103)।

2 अर्थात् बधित पशु के गर्भ से बच्चा निकल जाता और जीवित होता तो उसे केवल पुरुष खा सकते थे। और मुर्दा होता तो सभी (स्त्री-पुरुष) खा सकते थे। (देखिये: सूरह नहल 16: 58-59)। सूरह अन्नाम-151, तथा सूरह इस्रा-31)। जैसा कि आधुनिक सभ्य समाज में «सुखी परिवार» के लिये अनेक प्रकार से किया जा रहा है।

141. अल्लाह वही है जिस ने बेलों वाले तथा बिना बेलों वाले बाग पैदा किये। तथा खजूर और खेत जिन से विभिन्न प्रकार की पैदावार होती है और जैतून तथा अनार समरूप तथा स्वाद में विभिन्न, इस का फल खाओ जब फले, और फल तोड़ने के समय कुछ दान करो, तथा अपव्यय<sup>[१]</sup> (बेजा खर्च) न करो। निःसंदेह अल्लाह बेजा खर्च करने वालों से प्रेम नहीं करता।

142. तथा चौपायों में कुछ सवारी और बोझ लादने योग्य<sup>[२]</sup> हैं और कुछ धरती से लगे<sup>[३]</sup> हुये, तुम उन में से खाओ जो अल्लाह ने तुम्हें जीविका प्रदान की है। और शैतान के पदचिन्हों पर न चलो। वास्तव में वह तुम्हारा खुला शत्रु<sup>[४]</sup> है।

143. आठ पशु आपस में जोड़े हैं: भेड़ में से दो, तथा बकरी में से दो। आप उन से पूछिये कि क्या अल्लाह ने दोनों के नर हराम (वर्जित) किये

وَهُوَ الَّذِي أَنْشَأَ جَنَبٍ مَعْرُوشَتْ وَغَيْرَ  
مَعْرُوشَتْ وَالْتَّغْلُلُ وَالرُّؤْمُ مُخْتَلِفًا كُلُّهُ  
وَالرِّئْسُونُ وَالرُّمَانُ مُسْتَلِبًا وَغَيْرَ  
مُسْتَلِبًا كُلُّهُ اِنْ شَرِقَ اِذَا اَشَرَ وَإِنْ  
حَثَّهُ يَوْمَ حَصَادَهُ وَلَا شُرِفُوا إِنَّهُ لَا  
يُحِبُّ الْمُسْرِفِينَ ۝

وَمِنَ الْأَنْعَامِ حَمُولَهُ وَفَرِشَادُكُلُّهُ اِنْهَا  
رَزَقَكُمُ اللَّهُ وَلَا تَبْغِي عَوْاْخْطُوتُ الشَّيْطَنِ  
إِنَّهُ لَكُمْ عَدُوٌّ مُّبِينٌ ۝

ثَيْنِيَّةَ أَرْوَاهُجَّ مِنَ الصَّانِ اِنْثَيَنِ وَمِنَ  
الْمَعْرَاثَيَنِ قُلْ مَالَدُكَرِينُ حَرَمَ اِمْ  
الِانْثَيَنِ اَمَا اَشْتَمَدَتْ عَلَيْوَ اَرْحَامُ

1 अर्थात् इस प्रकार उन्होंने पशुओं में विभिन्न रूप बना लिये थे। जिन को चाहते अल्लाह के लिये विशेष कर देते और जिसे चाहते अपने देवी देवता के लिये विशेष कर देते। यहाँ इन्हीं अन्ध विश्वासियों का खण्डन किया जा रहा है। दान करो अथवा खाओ परन्तु अपव्यय न करो। क्योंकि यह शैतान का काम है, सब में संतुलन होना चाहिये।

2 जैसे ऊँट और बैल आदि।

3 जैसे बकरी और भेड़ आदि।

4 अल्लाह ने चौपायों को केवल सवारी और खाने के लिये बनाया है, देवी-देवताओं के नाम चढ़ाने के लिये नहीं। अब यदि कोई ऐसा करता है तो वह शैतान का बन्दा है और शैतान के बनाये मार्ग पर चलता है जिस से यहाँ मना किया जा रहा है।

हैं, अथवा दोनों की मादा, अथवा दोनों के गर्भ में जो बच्चे हों? मुझे ज्ञान के साथ बताओ, यदि तुम सच्चे हो।

144. और ऊँट में से दो, तथा गाय में से दो। आप पूछिये कि क्या अल्लाह ने दोनों के नर हराम (वर्जित) किये हैं, अथवा दोनों की मादा, अथवा दोनों के गर्भ में जो बच्चे हों? क्या तुम उपस्थित थे जब अल्लाह ने तुम्हें इस का आदेश दिया था, तो बताओ? उस से बड़ा अत्याचारी कौन होगा जो बिना ज्ञान के अल्लाह पर झूठ घड़े? निश्चय अल्लाह अत्याचारियों को संमार्ग नहीं दिखाता।

145. (हे नबी!) आप कह दें कि उस में जो मेरी ओर वहयी (प्रकाशना) की गयी है इन<sup>[1]</sup> में से खाने वालों पर कोई चीज़ वर्जित नहीं है, सिवाये उस के जो मरा हुआ हो<sup>[2]</sup> अथवा बहा हुआ रक्त हो या सूअर का मांस हो। क्योंकि वह अशुद्ध है, अथवा अवैध हो जिसे अल्लाह के सिवा दूसरे के नाम पर बध किया गया हो। परन्तु जो विवश हो जाये (तो वह खा सकता है) यदि वह द्वेषी तथा सीमा लाँघने वाला न हो। तो वास्तव में आप का पालनहार

الْأَنْتِيَمِينَ لَيَسْتُونَ بِعِلْمٍ لَكُنُّمْ صَدِيقُنَّ۝

وَمِنَ الْأَيْلِ اشْتَرَى وَمِنَ الْبَقَرِ اشْتَرَى قُلْ  
إِنَّ الدُّكَنِ حَرَمَ أَمَّا الْأَنْتِيَمِينَ أَمَا اشْتَرَى  
عَلَيْهِ أَرْحَامُ الْأَنْتِيَمِينَ أَمَّا كُنُّمْ شَهَدَاءِ إِذْ  
وَصَلَكُوا لِهُ بِهَذَا فَعَنْ أَظْلَمِ مِئَنِ افْتَرَى عَلَى  
اللَّهِ كَذَبَ الْيَضْلُّ النَّاسَ يَغْرِي عَلَيْهِ إِنَّ اللَّهَ لَا  
يَهْدِي الْقَوْمَ الظَّلِيلِينَ ۝

قُلْ لَا أَجِدُ فِي مَا أُوحِيَ إِلَيَّ مُحَرَّمًا عَلَى  
طَاعِمٍ يَطْعَمُهُ إِلَّا أَنْ يَكُونَ مَيْسَنَةً أَوْ دَمًا  
مَسْفُوحًا أَوْ لَحْمَ خَنْزِيرٍ فَإِنَّهُ رُجُسٌ أَوْ  
فِسْقًا أَهْلٌ لِغَيْرِ اللَّهِ بِهِ فَعَنِ اضْطُرَّرِ غَيْرِ بَارِغٍ  
وَلَا عَادٌ فَإِنَّ رَبَّكَ عَفُورٌ رَحِيمٌ ۝

1 जो तुम ने वर्जित किया है।

2 अर्थात् धर्म विधान अनुसार बध न किया गया हो।

अति क्षमी दयावान्<sup>[1]</sup> है।

146. तथा हम ने यहूदियों पर नखधारी<sup>[2]</sup> जीव हराम कर दिये थे और गाय तथा बकरी में से उन पर दोनों की चर्बियाँ हराम (वर्जित) कर दी<sup>[3]</sup> थी। परन्तु जो दोनों की पीठों या आंतों से लगी हों, अथवा जो किसी हड्डी से मिली हुई हो। यह हम ने उन की अवज्ञा के कारण उन्हें<sup>[4]</sup> प्रतिकार (बदला) दिया था। तथा निश्चय हम सच्चे हैं।
147. फिर (हे नबी!) यदि यह लोग आप को झुठलायें तो कह दें कि तुम्हारा पालनहार विशाल दयाकारी है तथा उस की यातना को अपराधियों से फेरा नहीं जा सकेगा।

148. मिश्रणवादी अवश्य कहेंगे: यदि अल्लाह चाहता तो हम तथा हमारे पूर्वज (अल्लाह का) साझी न बनाते, और न कुछ हराम (वर्जित) करते। इसी प्रकार इन से पूर्व के लोगों ने (रसूलों को) झुठलाया था, यहाँ तक

وَعَلَى الَّذِينَ هَادُوا حَرَمَنَا أَكْلَذِي طُفِيرٍ  
وَمِنَ الْبَقَرِ وَالغَنِيمَ حَرَمَنَا عَلَيْهِمْ شَحُونَهُمَا إِلَّا  
مَا حَمَدَتْ طَهُورُهُمَا وَالْحَوَافِي أَوْ مَا  
أَخْتَلَطَ بِعَظِيمٍ ذَلِكَ جَزِئُهُمْ بِعَيْمَهُمْ  
وَإِنَّ الصَّابِرِينَ ⑥

فَإِنْ كَذَّبُوكُمْ فَقُلْ رَبِّكُمْ دُوْرَحَمَةٌ وَاسْعَهُ  
وَلَا يُرَدُّ بِأَشَهٌ عَنِ الْقُوْمِ الْمُجْرِمِينَ ⑦

سَيَقُولُ الَّذِينَ أَسْرَيْنَا لِوَسَاءَ اللَّهُ مَا أَسْرَيْنَا  
وَلَا أَبْرُدُنَا وَلَا حَرَمَنَا مِنْ سَيِّئَاتِكُمْ كَذِلِكَ كَذِلِكَ  
الَّذِينَ مِنْ قَبْلِهِمْ حَتَّىٰ ذَاقُوا بِأَسْنَادِهِنَّ  
هَلْ عِنْدَكُمْ مِنْ عِلْمٍ فَتُخْرِجُوهُ لَنَا لَمَّا  
تَنَعَّمُونَ إِلَّا الظَّنَّ وَلَمْ أَنْهِ إِلَّا غَرْصُونَ ⑧

1 अर्थात् कोई भूक से विवश हो जाये तो अपनी प्राण रक्षा के लिये इन प्रतिबंधों के साथ हराम खा ले तो अल्लाह उसे क्षमा कर देगा।

2 अर्थात् जिन की उँगलियाँ फटी हुई न हों जैसे ऊँट, शुतुरमुर्ग, तथा बत्तख इत्यादि (इब्ने कसीर)

3 हदीस में है कि नबी (सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम) ने कहा: यहूदियों पर अल्लाह की धिक्कार हो! जब चर्बियाँ वर्जित की गईं तो उन्हें पिघला कर उन का मुल्य खा गये। (बुखारी - 2236)

4 देखिये: सूरह आले इमरान, आयत: 93 तथा सूरह निसा आयत: 160।

कि हमारी यातना का स्वाद चख लिया। (हे नबी!) उन से पछिये कि क्या तुम्हारे पास (इस विषय में) कोई ज्ञान है, जिसे तुम हमारे समक्ष प्रस्तुत कर सको? तुम तो केवल अनुमान पर चलते हो, और केवल आंकलन कर रहे हो।

149. (हे नबी!) आप कह दें कि पर्ण तर्क अल्लाह ही का है। तो यदि वह चाहता तो तुम सब को सुपथ दिखा देता<sup>[१]</sup>।
150. आप कहिये कि अपने साक्षियों (गवाहों) को लाओ<sup>[२]</sup>, जो साक्ष्य दें कि अल्लाह ने इसे हराम (अवैध) कर दिया है। फिर यदि वह साक्ष्य (गवाही) दें तब भी आप उन के साथ हो कर इसे न मानें, तथा उन की मनमानी पर न चलें, जिन्होंने हमारी आयतों को झुठला दिया, और परलोक पर ईमान (विश्वास) नहीं रखते, तथा दूसरों को अपने पालनहार के बराबर करते हैं।
151. आप उन से कहें कि आओ मैं तुम्हें (आयतें) पढ़ कर सुना दूँ कि तुम पर तुम्हारे पालनहार ने क्या हराम

قُلْ فَلَمَّا أَتَيْتُهُ الْبَالِغَةَ قَلَّ مَا شَاءَ لَهُ دَلِيلٌ  
أَجْمَعِينَ ⑩

قُلْ هَلْقُ شُهَدَاءَ كُمُّ الَّذِينَ يَشْهُدُونَ  
أَئِنَّ اللَّهَ حَرَمَ هَذَا ۝ قَلْ شُهَدُوا فَلَا يَشْهُدُ  
مَعَهُمْ وَلَا تَتَبَعُ أَهْوَاءَ الَّذِينَ كَذَّبُوا  
بِإِيمَانِنَا وَالَّذِينَ لَا يُؤْمِنُونَ بِالآخِرَةِ  
وَهُمْ بِرَبِّهِمْ يَعْدِلُونَ ⑪

قُلْ تَعَالَوْا أَتُلْ مَا حَرَمَ رَبُّكُمْ عَلَيْكُمُ الْأَكْثَرُ  
شَرِكُوا بِهِ شَيْئًا وَبِإِلَهَيْنِ إِحْسَانًا وَلَا

1 परन्तु उस ने इसे लोगों को समझ बूझ दे कर प्रत्येक दशा का एक परिणाम निर्धारित कर दिया है। और सत्योसत्य दोनों की राहें खोल दी हैं। अब जो व्यक्ति जो राह चाहे अपना ले। और अब यह कहना अज्ञानता की बात है कि यदि अल्लाह चाहता तो हम संमार्ग पर होते।

2 हदीस में है कि सब से बड़ा पापः अल्लाह का साझी बनाना तथा माता-पिता के साथ बुरा व्यवहार और झूठी शपथ लेना है। (तिर्मिज़ी -3020, यह हदीस हसन है।)

(अवैध) किया है? वह यह है कि किसी चीज को उस का साझी न बनाओ। और माता- पिता के साथ उपकार करो। और अपनी संतानों को निर्धनता के भय से बध न करो। हम तुम्हें जीविका देते हैं और उन्हें भी देंगे और निर्लज्जा की बातों के समीप भी न जाओ, खुली हों अथवा छुपी, और जिस प्राण को अल्लाह ने हराम (अवैध) कर दिया है उसे बध न करो परन्तु उचित कारण<sup>[1]</sup> से। अल्लाह ने तुम्हें इस का आदेश दिया है ताकि इसे समझो।

152. और अनाथ के धन के समीप न जाओ परन्तु ऐसे ढंग से जो उचित हो। यहाँ तक कि वह अपनी युवा अवस्था को पहुँच जाये। तथा नाप - तौल न्याय के साथ पूरा करो। हम किसी प्राण पर उस की सकत से अधिक भार नहीं रखते और जब बोलो तो न्याय करो, यद्यपि समीपवर्ती ही क्यों न हो। और अल्लाह का वचन पूरा करो, उस ने तुम्हें इस का आदेश दिया है, संभवतः तुम शिक्षा ग्रहण करो।

153. तथा (उस ने बताया है कि) यह

نَفَّثُوا أَوْلَادَهُمْ مِنْ إِمْلَاقِ مُخْنَقٍ شَرْقُهُ  
وَلَا يَأْهُمُ وَلَا تَقْرُبُوا الْفَوَاحِشَ مَا ظَهَرَ مِنْهَا  
وَمَا بَطَّنَ وَلَا نَسْتَأْنُ النُّفُسَ إِلَّيْ خَرَمَ اللَّهُ إِلَّا  
بِالْحَقِّ ذَلِكُمْ وَضْلَكُمْ بِهِ لَعْلَكُمْ تَعْقِلُونَ ⑥

وَلَا تَقْرُبُو مَالَ الْيَتَامَةِ إِلَّا يَأْتِيَهُ  
أَحْسَنُ حَتَّى يَنْلَمِعَ أَشْدَادُهُ وَأَوْفُ الْكَيْلِ  
وَالْمِيزَانَ بِالْقِسْطِ لَا يُكْلِفُ نَفْسًا إِلَّا وُسْعَهَا  
وَلَا يَأْكُلُهُ قَاعِدًا لَوْ كَانَ ذَاقْرُبِيًّا وَبِعَمَّيْ  
اللَّهُ أَوْ فَوْذَلِكُمْ وَضْلَكُمْ بِهِ لَعْلَكُمْ تَدَرُّونَ ⑥

وَأَنَّ هَذَا صَرَاطٌ مُسْتَقِيمٌ أَنَّبِيعُوهُ وَلَا تَنْبِغِي

1 सहीह हदीस में है कि किसी मुसलमान का खून तीन कारणों के सिवा अवैध है:

1. किसी ने विवाहित हो कर व्यभिचार किया हो।
2. किसी मुसलमान को जान बूझ कर अवैध मार डाला हो।
3. इस्लाम से फिर गया हो और अल्लाह तथा उस के रसूल से युद्ध करने लगे। (सहीह मुस्लिम, हदीस-1676)

(इस्लाम ही) अल्लाह की सीधी राह<sup>[1]</sup> है। अतः इसी पर चलो और दूसरी राहों पर न चलो अन्यथा वह तुम्हें उस की राह से दूर कर के तितर बित्तर कर देंगे। यही है जिस का आदेश उस ने तुम्हें दिया है, ताकि तुम उस के आज्ञाकारी रहो।

154. फिर हम ने मूसा को पुस्तक (तौरात) प्रदान की थी उस पर पुरस्कार पूरा करने के लिये जो सदाचारी हो, तथा प्रत्येक वस्तु के विवरण के लिये, तथा यह मार्गदर्शन और दया थी, ताकि वह अपने पालनहार से मिलने पर ईमान लायें।

155. तथा (उसी प्रकार) यह पुस्तक (कुर्�आन) हम ने अवतरित की है, यह बड़ा शुभकारी है। अतः इस पर चलो<sup>[2]</sup> और अल्लाह से डरते रहो, ताकि तुम पर दया की जाये।

156. ताकि (हे अरब वासियो!) तुम यह न कहो कि हम से पूर्व दो सुमदाय (यहूद तथा ईसाई) पर पुस्तक उतारी गयी और हम उन के पढ़ने-पढ़ाने से अनजान रह गये।

157. या यह न कहो कि यदि हम पर

الْبُلَّ تَقْرَقِقَ كَمْ عَنْ سَبِيلِهِ ذَلِكُمْ وَضْلُلُهُمْ  
كَلَمْ تَقْتُونَ ④

لَئِنْ مُوسَى الْكَتَبَ نَهَمَّا عَلَى الَّذِي أَحْسَنَ  
وَقَصْلِلَ لِكُلِّ شَيْءٍ وَهُدَى وَرَحْمَةً لَعَلَّهُمْ  
يَلْقَاءُ رَبِّهِمْ يُؤْمِنُونَ ۝

وَهَذَا إِنَّمَا أَنْزَلْنَا مُبَرَّكًا فَاتِّبِعُوهُ وَاقْتُلُوا  
كَلَمْ تُرْحَمُونَ ۝

أَنْ تَقُولُوا إِنَّمَا أَنْزَلَ اللَّهُ عَلَىٰ كُلِّفَتِينِ  
مِنْ قَبْلِنَا وَإِنْ كُلَّا عَنْ دِرَاسَتِهِمْ لَغَافِلِينَ ۝

أَنْ تَقُولُوا لَوْلَا أَنْزَلَ عَلَيْنَا اللَّهُ لَكُمْ أَهْدَى

1 नबी (सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम) ने एक लकीर बनाई, और कहा: यह अल्लाह की राह है। फिर दायें बायें कई लकीरें खींची और कहा: इन पर शैतान है जो इन की ओर बुलाता है और यही आयत पढ़ी। (मुस्नद अहमद-431)

2 अर्थात अब अह्ले किताब सहित पूरे संसार वासियों के लिये प्रलय तक इसी कुर्�आन का अनुसरण ही अल्लाह की दया का साधन है।

पुस्तक उतारी जाती तो निश्चय हम उन से अधिक सीधी राह पर होते, तो अब तुम्हारे पास तुम्हारे पालनहार की ओर से एक खुला तर्क आ गया, मार्ग दर्शन तथा दया आ गई। फिर उस से बड़ा अत्याचारी कौन होगा जो अल्लाह की आयतों को मिथ्या कह दे, और उन से कतरा जायें? और जो लोग हमारी आयतों से कतराते हैं हम उन के कतराने के बदले उन्हें कड़ी यातना देंगे।

158. क्या वह लोग इसी बात की प्रतीक्षा कर रहे हैं कि उन के पास फ़रिश्ते आ जायें, या स्वयं उन का पालनहार आ जाये या आप के पालनहार की कोई आयत (निशानी) आ जाये?<sup>[1]</sup> जिस दिन आप के पालनहार की कोई निशानी आ जायेगी तो किसी प्राणी को उस का ईमान लाभ नहीं देगा जो पहले ईमान न लाया हो, या अपने ईमान की स्थिति में कोई सत्कर्म न किया हो। आप कह-

مِنْهُمْ فَقَدْ جَاءَكُمْ بِيَوْنَةٍ مِّنْ رَّبِّكُمْ  
وَهُدًى وَرَحْمَةً وَمَنْ أَظْلَمُ مِمَّنْ كَذَّبَ  
رَبِّهِ اتَّلَهُ وَصَدَّفَ عَنْهُ لَهُ سَجْرِيَ الَّذِينَ  
يَصْدِقُونَ عَنْ أَيْتَنَا سُوءَ الْعَذَابِ بِمَا كَانُوا  
يَصْدِقُونَ @

هُلْ يَنْظُرُونَ إِلَّا أَنْ تَأْتِيهِمُ الْمُلْكَةُ أَوْ يَأْتِيَ رَبِّكَ  
أَوْ يَأْتِيَ بَعْضُ إِلَيْتَ رَبِّكَ يَوْمًا يَوْمٌ بَعْضُ إِلَيْتَ  
رَبِّكَ لَا يَنْقَعُ نَفْسًا إِلَيْهَا الْمُؤْكَلُونَ امْتُ مِنْ قَبْلِ  
أَوْ كَبَدَتْ فِي إِيمَانِهَا خَيْرًا قَلْ أَنْتَرِقُ إِلَيْهَا  
مُنْذَرُونَ @

1 आयत का भावार्थ यह है कि इन सभी तर्कों के प्रस्तुत किये जाने पर भी यदि यह ईमान नहीं लाते तो क्या उस समय ईमान लायेंगे जब फ़रिश्ते उन के प्राण निकालने आयेंगे? या प्रलय के दिन जब अल्लाह इन का निर्णय करने आयेगा? या जब प्रलय की कुछ निशानियाँ आ जायेंगी? जैसे सूर्य का पश्चिम से निकल आना। सहीह बुखारी की हदीस है कि आप सल्ललाहू अलैहि व सल्लम ने कहा कि प्रलय उस समय तक नहीं आयेगी जब तक कि सूर्य पश्चिम से नहीं निकलेगा। और जब निकलेगा तो जो देखेंगे सभी ईमान ले आयेंगे। और यह वह समय होगा कि किसी प्राणी को उस का ईमान लाभ नहीं देगा। फिर आप ने यही आयत पढ़ी। (सहीह बुखारी, हदीस-4636)

दें कि तुम प्रतीक्षा करो, हम भी प्रतीक्षा कर रहे हैं।

159. जिन लोगों ने अपने धर्म में विभेद किया और कई समुदाय हो गये, (हे नबी!) आप का उन से कोई सम्बंध नहीं, उन का निर्णय अल्लाह को करना है, फिर वह उन्हें बतायेगा कि वह क्या कर रहे थे।
160. जो (प्रलय के दिन) एक सत्कर्म ले कर (अल्लाह से) मिलेगा, उसे उस के दस गुना प्रतिफल मिलेगा। और जो कुकर्म लायेगा तो उस को उसी के बराबर कुफल दिया जायेगा, तथा उन पर अत्याचार नहीं किया जायेगा।
161. (हे नबी!) आप कह दें कि मेरे पालनहार ने निश्चय मुझे सीधी राह (सुपथ) दिखा दी है। वही सीधा धर्म जो एकेश्वरवादी इब्राहीम का धर्म था, और वह मुशरिकों में से न था।
162. आप कह दें कि निश्चय मेरी नमाज़ और मेरी कुर्बानी तथा मेरा जीवन-मरण संसार के पालनहार अल्लाह के लिये है।
163. जिस का कोई साझी नहीं तथा मुझे इसी का आदेश दिया गया है और मैं प्रथम मुसलमानों में से हूँ।
164. आप उन से कह दें कि क्या मैं अल्लाह के सिवा किसी ओर पालनहार की खोज करूँ? जब कि वह (अल्लाह) प्रत्येक चीज़ का पालनहार है तथा

إِنَّ الَّذِينَ فَرَقُوا دِينَهُمْ وَكَانُوا شَيْعَاتٍ مِّنْهُمْ  
فِي سَبِيلٍ إِنَّمَا أَمْرُهُمْ إِلَى اللَّهِ وَيُنَزِّهُنَّهُمْ بِمَا كُلُّهُ  
يَعْلَمُونَ ⑤

مَنْ جَاءَ بِالْحُسْنَةِ فَلَكَ عَشْرًا مِّنْهَا وَمَنْ جَاءَ  
بِالشَّيْئَةِ فَلَا يُجْزَى إِلَّا مِثْلُهَا وَهُمْ لَا يُظْلَمُونَ ⑥

فُلُّ إِنَّمَا هَذَا بِرٌّ فِي الْمَرَاطِعِ مُسْتَقْبِلُهُ  
دِيَنَارٌ قَمَّا مَلَّةً إِبْرَاهِيمَ حَنِيفًا وَمَا كَانَ مِنَ  
الْمُشْرِكِينَ ⑦

فُلُّ إِنَّ صَلَاتِي وَنُسُكِي وَمَحْيَايَ وَمَمَاتِي بِلِهِ  
رَبِّ الْعَالَمِينَ ⑧

لَا سَرِيكَ لَهُ وَبِذِلِكَ أُرْثٌ وَأَنَا أَوَّلُ الْمُسْلِمِينَ

فُلُّ أَغْيَرَ اللَّهَ أَبْغَى رِبَّا وَهُورَبُ غَلِّي شَوِيٌّ وَلَائِكِبُ  
كُلُّ نَهْيٌ إِلَّا عَلَيْهَا وَلَا شَرُورٌ وَازْدَادٌ وَذُرُّ أَخْرَى تُؤْمِنُ إِلَى  
رَبِّكَمْ وَحْدَكُمْ فِيَنْتَهُمْ بِمَا كُلُّهُ فِيَنْتَهُونَ ⑨

कोई प्राणी कोई भी कुकर्म करेगा,  
तो उस का भार उसी पर होगा।  
और कोई किसी दूसरे का बोझ नहीं  
उठायेगा। फिर (अन्ततः) तुम्हें अपने  
पालनहार के पास ही जाना है। तो  
जिन बातों में तूम विभेद कर रहे हो  
वह तुम्हें बता देगा।

165. वही है जिस ने तुम्हें धरती में  
अधिकार दिया है और तुम में से कुछ  
को (धन शक्ति में) दूसरे से कई  
श्रेणियाँ ऊँचा किया हैं। ताकि उस में  
तुम्हारी परीक्षा<sup>[1]</sup> ले जो तुम्हें दिया  
है। वास्तव में आप का पालनहार  
शीघ्र ही दण्ड देने वाला<sup>[2]</sup> है और  
वास्तव में वह अति क्षमी दयावान् है।

وَهُوَ الَّذِي جَعَلَكُمْ خَلِيفَ الْأَرْضِ وَرَقَمَ بَعْضَهُ  
فَوْقَ بَعْضٍ دَرَجَتِ الْبَلْوَةِ فِي تَأْنِيمِكُمْ إِنَّ رَبَّكَ  
سَرِيعُ الْعِقَابِ وَإِنَّهُ لَغَفُورٌ رَّحِيمٌ ۝

1 नबी सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने कहा: कौबा के रब्ब की शपथ! वह क्षति  
में पड़ गया। अबूजर (रजियल्लाहु अन्ह) ने कहा: कौन? आप (सल्लल्लाहु अलैहि  
व सल्लम) ने कहा: (धनी)। परन्तु जो दान करता रहता है। (सहीह बुखारी-  
6638, सही मुस्लिम-990)

2 अर्थात् अवैज्ञाकारियों को।